निर्मला योग

द्विमासिक वर्ष ४ अंक २० जुलाई-अगस्त १९८५

ॐ त्वमेव साक्षात्, श्री कल्की साक्षात्, श्री सहस्रार स्वामिनी, मोक्ष प्रदायिनी, माता जी, श्री निर्मला देवी नमो नमः ॥

卐 जय श्री माता जी 卐

श्री 'निर्मला' नाम मन्त्र माला

(परमपूज्य श्री माता जी के १०८ नाम)

जय श्री माता जी निर्मला ।
जय श्री महाराज्ञी जय अकुला ।।१।। जय ।।

देवकार्य समुद्यता, विष्णुग्रंथि विभेदिनी ।
भक्तिप्रिया, भक्तिगम्या, शर्मदायिनी ।।२।। जय ।।

निरंजना, निर्लेपा, निष्कला ।
नित्या, निराकारा, निराकुला ।।३।। जय ।।

निरुपप्लवा, नित्यमुक्ता, निर्विकारा ।
निरंतरा, निश्चिन्ता, निरहंकारा ।।४।। जय ।।

निर्मोहा, निष्पापा, निःसंशया ।
निर्ममा, निर्विकल्पा, निरत्यया ।।५।। जय ।।

निष्कलंका, निर्गुणा, निराश्रया ।
निष्कामा, निष्कारणा, निष्क्रिया ।।६।। जय ।।

नीरागा, निर्मदा, निरीश्वरा ।
निस्तुला, निर्नाशा नीलचिकुरा ।।७।। जय ।।

निरुपाधि, निराबाधा, निरपाया ।
गंभीरा, निष्परिग्रहा, महामाया ।।८।। जय ।।

महादेवी, महापूज्या, महापातकनाशिनी ।
सान्द्रकरुणा, सुखप्रदा, एकाकिनी ।।९।। जय ।।

महाशक्ति, निर्भवा, महारतिः ।
विश्वरूपा, पद्मासना, सुधास्तुति ।।१०।। जय ।।

(शेष तृतीय कवर पृष्ठ पर)

सम्पादकीय

'कबीर' भाठी कलाल की, बहुतक बैठे आई ।
सिर सौंपे सोई पिवै, नहीं तो पिया न जाय ।।

संत कवि श्री कबीर दास जी ने इन दो पंक्तियों में ही सम्पूर्ण सहजयोग को व्यक्त कर दिया है । जब तक हम अहंकार से अपने को अलग नहीं करते, हमारी सम्पूर्ण तपस्या व्यर्थ है ।

श्री कबीर दास जी कहते हैं कि कलाल की भट्टी पर अर्थात् सद्गुरु के पास बहुत लोग आते हैं किन्तु इस मदिरा का पान अर्थात् प्रभु का प्रेम रस, निरानन्द वही पी सकता है जिसने अहंकाररूपी शीष को हंसी-हंसी सद्गुरु को सौंप दिया है, यानि अहंकार को छोड़ दिया है ।

कहने का तात्पर्य है कि अहंकार यानि 'मैं' को अपने 'स्वयं' से अलग करना अत्यन्त ही आवश्यक है ।

ॐ त्वमेव साक्षात् श्री महत् अहंकार साक्षात् श्री आदिशक्ति माता जी श्री निर्मला देव्यै नमो नमः ।

निर्मला योग

४३, बंगलो रोड, दिल्ली-११०००७

संस्थापक : परमपूज्य माताजी श्री निर्मला देवी

सम्पादक मण्डल : डॉ शिव कुमार माथुर
श्री आनन्द स्वरूप मिश्र
श्री आर. डी. कुलकर्णी

प्रतिनिधि कनाडा : लोरी हायनेक
३१५१, हीदर स्ट्रीट
वैन्कूवर, बी. सी.
वी ५ जैड ३ के २

यू.एस.ए. श्रीमती क्रिस्टाइन पेंट्रूनीया
२७०, जे स्ट्रीट, १/सी
ब्रुकलिन, न्यूयार्क-११२०१

भारत श्री एम. बी. रत्नान्नवर
१३, मेरवान मैन्सन
गंजवाला लेन, बोरीवली
(पश्चिमी) बम्बई-४०००९२

यू.के. श्री गेविन ब्राउन
ब्राउन्स जियोलॉजिकल इन्फ़र्मेशन
सर्विस लि.,
१३४ ग्रेट पोर्टलैण्ड स्ट्रीट
लन्दन डब्लू. १ एन. ५ पी. एच.

इस अंक में ..... पृष्ठ

१. सम्पादकीय ... १
२. प्रतिनिधि ... २
३. पूर्ण समर्पण : एकमेव पथ ... ३
४. सहजयोग के लिए भारतीय सभ्यता एवं संस्कृति का महत्व ... १४
५. श्री निर्मला नाम मन्त्र माला ... द्वितीय कवर

श्री माताजी निर्मला देवी

पूर्ण समर्पण : एकमेव पथ*

काउली मैनर गोष्ठी
दिनांक ३१-७-८२

आज मैं तुम्हें कुछ कहने जा रही हूँ। यह मुझे बहुत पहले बताना चाहिये था।

जैसा मैंने आज आपको बताया कि यह आवश्यक है कि आप मुझे सश्रद्ध मान्यता दें। मान्यता देना निश्चित है, यह शर्त अनिवार्य है। मैं इसे बदल नहीं सकती। जैसा यीशु ने पहले ही कह दिया है, आप मेरा (यीशू का) विरोध करें तो वह सहा जा सकता है, उसे क्षमा कर दिया जायगा, किन्तु आदि शक्ति का विरोध तनिक भी नहीं। यह एक बहुत बड़ी चेतावनी है। शायद लोग नहीं समझते इसका क्या अर्थ है। यह सच है आपमें से कोई भी मेरे विरुद्ध नहीं है, यह निःसन्देह है। आखिर आप मेरी सन्तान हैं। मैं आपको बहुत प्यार करती हूँ और आप मुझे प्यार करते हैं। यह तो केवल येशु ने आपको चेतावनी दी है। सोचना चाहिये जिस वेग से हमें उन्नति करनी चाहिये उस वेग से क्यों नहीं कर रहे हैं।

जब लोग सम्मोहित (mesmerise) कर दिये जाते हैं तब वे अपने गुरुओं के सामने बिल्कुल लम्बे पड़ जाते हैं। जब उन्हें सम्मोहित कर दिया जाता है तो वे सब कुछ दे देते हैं, अपना रुपया-पैसा, घर-परिवार, बच्चे, और लम्बे लेट जाते हैं, अपने गुरू के विषय में बिना कोई प्रश्न पूछे, बिना कुछ जांच पड़ताल किये, बिना उसकी जीवनी के बारे में कुछ पता लगाने की कोशिश किये। ऐसे लोग बड़ी जल्दी अंधकार में पड़ जाते हैं, और उनका यह अंधकार बढ़ता ही जाता है और अन्त में वे पूर्ण विनाश को प्राप्त होते हैं। किन्तु आप लोग सहजयोगी हैं और आपको स्वयं को संवारना है।

मैं पहले आपके अहंभाव (ego) को ठेस नहीं पहुँचाना चाहती थी। इन शब्दों में आपको बताना नहीं चाहती थी। शायद यह पहली बार आपसे मैं ये कह रही हूँ कि आपको अपने को मुझे पूर्ण रूप से समर्पित करना है—सहजोयग को नहीं, बल्कि मुझको। सहजयोग केवल मेरा एक अंग (पहलू) है। सब कुछ त्याग कर आपको समर्पण करना है—पूर्ण समर्पण। अन्यथा आप ऊंचे नहीं उठ सकते। बिना प्रश्न, बिना तर्क-वितर्क। पूर्ण समर्पण द्वारा ही आप यह पा सकते हैं।

अभी भी लोग 'बाधा-ग्रस्त' होते हैं, अभी भी समस्याओं में फंस जाते हैं। इसका क्या कारण है? बहुत से लोग मुझसे पूछते हैं—माँ, एक बार आत्मसाक्षात्कार पाने के बाद, कैसे हम दुबारा नीचे गिर जाते हैं? इसका एकमात्र कारण है कि समर्पण सम्पूर्ण नहीं है। यदि पूर्ण समर्पण स्थापित नहीं हुआ है, अभी भी जितना चाहिये उतना ज्ञान आपको नहीं है कि मैं दैवी (Divine) सत्ता हूँ। मेरा मतलब यह नहीं आप सब—किन्तु फिर भी यदि आप अपने हृदय में देखें, मस्तिष्क में झाँकें, आप देखेंगे कि पूर्ण श्रद्धा जो आप, उदाहरणार्थ यीशु या कृष्ण के प्रति या जो और पहले हो चुके हैं उनके प्रति आपकी थी वह नहीं है।

(* निर्मला योग (अंग्रेजी) नवम्बर-दिसम्बर—पृष्ठ ३ से अनुवादित)।

कृष्ण ने कहा था 'सर्व धर्माणाम् परित्यज्य मामेकम् शरणम् व्रज' सारे सांसारिक धर्मों को भूल जाओ। यहां 'धर्मों' का अर्थ यह नहीं है जैसे हिन्दू, ईसाई, मुसलिम आदि, किन्तु उनका अभिप्राय था जो 'धारणा' अर्थात् समाज रचना का संरक्षण ऐसे धर्मों (धारणाओं) को भूल जाओ और मुझे पूर्ण समर्पण दो। यह उन्होंने छः हजार वर्ष पहले कहा था। और आज भी ऐसे अनेक हैं जो अभी भी कहते हैं "हमने अपने को श्री कृष्ण को पूर्ण समर्पित किया हुआ है।" किन्तु आज श्री कृष्ण कहां हैं? यहां तक कि वे जिन्हें मैंने आत्मसाक्षात्कार प्रदान किया है ऐसा कहते हैं। यह सच है कि कृष्ण में और मुझ में कोई अन्तर नहीं। किन्तु आज वह मैं हूं जिसने आपको आत्म-साक्षात्कार प्रदान किया है। किन्तु हमारा प्रथम ध्यान अपने धन्धे, अपनी निजी समस्याओं और अपनी पारिवारिक समस्याओं पर रहता है और समर्पण अन्त में आता है।

मैं भ्रामक (illusive) हूं—यह सत्य है। मेरा नाम है 'महामाया'। निस्सन्देह मैं भ्रामक हूं। किन्तु मैं भ्रम उत्पन्न करती हूं बस आपको परखने के लिये।

अब समर्पण प्रगति, उन्नति का एक बहुत महत्वपूर्ण अंश है। क्यों? क्योंकि जब आप ऐसी अवस्था में स्थित हैं, जबकि आपके अस्तित्व को खतरा सिर पर है, ऐसे समय जब समस्त विश्व ऐसी आपात स्थिति में है जहां वह पूर्ण नष्ट होने जा रहा है, ऐसे समय यह अत्यन्त महत्वपूर्ण है कि आप उस चीज को जो आपको बचाने वाली है जकड़ कर पकड़ लें, पूर्ण शक्ति, पूर्ण श्रद्धा के साथ। जैसे आप यदि साधारण पानी में भीग गये हैं तो कोई बात नहीं। किन्तु यदि आप समुद्र में डूब रहे हैं और प्रश्न है, यह क्षण जीवन वह क्षण मृत्यु, ऐसे समय अगर कोई हाथ आपको बचाने को अग्रसर होता है तब आपको और सोचने का समय नहीं होता। तत्काल उसको पूर्ण शक्ति और पूर्ण विश्वास के साथ जकड़ लेना होता है।

जब हम बाधा-ग्रस्त होते हैं, जब हम विकारों से घिरे होते हैं, हमें उनकी जानकारी होती है और हम कुछ भ्रम में पड़ जाते हैं (confused) ऐसे समय हम दृढ़ता से पकड़ना चाहते हैं। किन्तु दूसरी ओर 'बाधाएं' आपके मन में ऐसे विचार उत्पन्न करती हैं जो हानिकारक हैं। अतः एक बड़ा द्वन्द्व (struggle) सा आरम्भ हो जाता है। ऐसे समय सबसे अच्छा रास्ता क्या है? सबसे अच्छा रास्ता है और सब कुछ भूल जाओ, भूल जाओ कि कोई बाधा है या आप पर कोई भूत आरूढ़ (possessed) है या कुछ भी। अपनी जितनी भी शक्ति है, अपनी सम्पूर्ण शक्ति से मुझे पकड़े रहो।

किन्तु हमारी समर्पण की शैली बड़ी फैशनेबल और आधुनिक है जिसमें सहजयोग अल्प महत्व रखता है और मां भी यों ही (by the way) होती है। मुझे खेद है इससे काम नहीं बनेगा। यह मुझे आपको बताने की आवश्यकता नहीं क्योंकि यदि आप 'देवी महात्म्य' पढ़ें तो काफी है। यदि आप देवी के १००० नाम पढ़ें तो भी काफी है कि वह केवल भक्ति द्वारा प्राप्त की जा सकती है। वह केवल समर्पण द्वारा प्राप्त की जा सकती है। वह भक्त-प्रेमी, समर्पण-युक्तों की प्रेमी है। यह कहीं नहीं लिखा कि वह ऐसे लोगों की प्रेमी है जो अच्छा बोलते हैं, जो अच्छा तर्क करते हैं, जिनका पहनावा, रहन-सहन अच्छा है, जिनका परिवेश (surroundings) अच्छा है। बस वह भक्त प्रेमी हैं। और यह श्रद्धा, भक्ति एक सनक (frenzy) या ऐसी कुछ नहीं होनी चाहिये, किन्तु स्थायी, निरन्तर धारावाही, ऊर्ध्वगामी (ever growing) होनी चाहिये। अब आगे के विकास के लिये बस यही रास्ता है।

हमारे लिये अनेक छोटी-छोटी समस्याएं महत्व रखती हैं। किसी को मकान की, किसी को कालिज प्रवेश की, किसी को रोजगार की। ये सब धर्म हैं जिनके लिये श्री कृष्ण ने कहा है, "सर्व धर्माणां परित्यज्य मामेकं शरणं व्रज।" समस्त धर्मों को त्याग दो—इन सब तथाकथित धर्मों को, जैसे 'पत्नि धर्म' पत्नी का कर्तव्य है, 'पति धर्म' पति का कर्तव्य है, 'पुत्र धर्म' पुत्र का कर्तव्य है, 'पिता धर्म' पिता का कर्तव्य है, नागरिक का धर्म, विश्व नागरिक का धर्म। यह सब धर्म पूर्ण रूप से त्याग दो। और पूर्ण रूप से, हृदय से आपको मुझे समर्पण करना है।

मैं जो हूं वह हूं, वही मैं सदैव थी और रहूंगी। मैं न बढ़ूंगी, न घटूंगी। मैं एक सनातन व्यक्तित्व हूं। आप, जितनी आपमें सामर्थ्य है मुझ से प्राप्त कर लें, इस युग में अपने जन्म का उपयोग कर लें। अपनी पूर्ण परिपक्वता तक बढ़ें, परमात्मा आपके माध्यम से जो परिकल्पना कार्यान्वित करना चाहता है उसे क्रियान्वित करने योग्य बनें। ज्यों ही समर्पण जाग्रत होता है, आप गतिमान बन जाते हैं। बस उसमें दृढ़ रहें।

इसके लिये 'ध्यान' एक मात्र पथ है, ऐसा कहना चाहिये। यह सच है कि आप बुद्धि से अनेक काम कर सकते हैं, तर्क द्वारा आप मुझे स्वीकार कर सकते हैं, भावुकता में आप अपने आपको मेरे निकट अनुभव कर सकते हैं, किन्तु वास्तविक मार्ग है, ध्यान द्वारा, समर्पण द्वारा। 'ध्यान' समर्पण के अतिरिक्त अन्य कुछ नहीं है। पाश्चात्य देशों के आधुनिक मानव के लिये वह कठिन कार्य है। वह केवल उनके सामने समर्पण करता है जो 'मेसमेराइज' करते हैं, जो उन्हें पूर्ण 'मेसमेराइज' (अपनी चेतना-शून्य) कर दें। जो लोग उन्हें 'मेसमेराइज' कर दें उनके वह पूर्ण दास बन जाते हैं। परन्तु जब वे अपने स्वातन्त्र्य में स्थित रहते हैं उस समय उनका अहं-भाव उनकी 'आत्मा' से अधिक बलशाली होता है—जब वे अपने स्वातन्त्र्य में होते हैं। स्वतन्त्र देशों के सर्वनाश का यही कारण है। क्योंकि अहंभाव (ego) कार्यशील होता है, न कि आत्मा। जब वे स्वातन्त्र्य में स्थित होते हैं तब वे अपने अहंभाव पर नियन्त्रण नहीं कर सकते। केवल जब कोई उनके अहंभाव को उलझा कर बंधन में जकड़ देता है और उन्हें मेसमेराइज कर देता है, तब वे ठीक हो जाते है, वे बन्दी हो जाते हैं और पूर्ण समर्पण कर देते हैं। इन कपटी लोगों ने आपको दास बनाने की कला में जैसी निपुणता प्राप्त कर ली है, उससे यह स्पष्ट है।

अपने पूर्ण स्वातन्त्र्य में आपको समर्पण करना चाहिये।

स्वातन्त्र्य का अर्थ अहंभाव नहीं है, यह आप समझ लें। अहंभाव से स्वातन्त्र्य का नाश हो जाता है। इतना ही नहीं उससे स्वातन्त्र्य विकृत, कान्ति-हीन व कुरूप हो जाता है। अपने सूक्ष्मतम स्वरूप में स्वातन्त्र्य पूर्ण अहं-शून्यता है, जिसमें कोई खुरखुरापन न हो, पूर्ण स्निग्धता, पूर्ण रिक्तता (hollowness), बांसुरी की भांति, जिससे परमात्मा का संगीत सुन्दर बज सके। वह है पूर्ण स्वातन्त्र्य। बिना किसी शर्त के।

हम यह समझ लें कि हम दलदल में फंसे हैं, अज्ञान की दलदल, पाप की दलदल। अज्ञान से पाप उत्पन्न होता है। इस दलदल से हम कैसे निकल सकते हैं? जो हमें उससे निकालने की कोशिश करेगा वह भी उसमें फंस जायगा। जो उसके पास भी आना चाहता है वह भी दलदल में फंस जाता है, उसमें समा जाता है। हम जितना दूसरों से सहायता लेने की कोशिश करते हैं, उतना हम और अधिक उन्हें दलदल में खींच लेते हैं और स्वयं नीचे धंसते जाते हैं।

अतः इस कुण्डलिनीरूपी वृक्ष की वृद्धि होनी चाहिये। और उस वृक्ष से स्वयं परमात्मा, स्वयं परब्रह्म आपको उस दलदल से बाहर खींचेंगे। यह वृक्ष दलदल से बाहर ऊंचा बढ़ता है और परब्रह्म एक-एक करके आपका हाथ पकड़ेंगे और आपको झूले की पींग (swing) की तरह बाहर निकालेंगे। किन्तु फिर भी जब आपको वह बाहर निकाल रहे हैं उस समय यदि आपकी पकड़ मजबूत नहीं है, तो आप फिर फिसल जाते हैं—आप थोड़ा बाहर निकलते हैं और फिर फिसल कर दलदल में धंस जाते हैं। जब दलदल से बाहर निकलते हैं तो बड़ा आनन्द आता है। किन्तु उस समय भी पैर पूरे बाहर नहीं आये हैं। आप पूरे स्वच्छ नहीं हुए हैं। जब तक आप पूर्ण स्वच्छ, निर्मल नहीं होते तब तक आप पूर्ण आशीर्वादित कैसे हो सकते हैं? आप परमात्मा का पूर्ण आशीर्वाद अर्जन करें, परमात्मा के प्रेम में रम जांय।

देख कर आश्चर्य होता है कैसे वे लोग जो इन कपटी गुरुओं के पास जाते हैं उनसे चिपक जाते हैं, ऐसा अपार समर्पण देते हैं कि आप चकित हो जाते हैं। वे ढीले-ढाले, अकर्मण्य से हो जाते हैं। (उन्हें जैसा चाहो तोड़ लो, मोड़ लो।) जब तक उनका पूर्ण सर्वनाश नहीं हो जाता तब तक उनके पास जो कुछ भी है वे समर्पण करते रहते हैं।

किन्तु जब लोग सहजयोग में आते हैं तब वे समर्पण नहीं करते, बल्कि उनका लालन-पालन, उनका पोषण, देख-रेख की जाती है। उनका स्वास्थ्य सुधरता है, आर्थिक उन्नति होती है, उनकी मानसिक स्थिति सुधरती है, उनके सम्बन्ध सुधरते हैं, हर प्रकार वे पहले से अच्छा अनुभव करते हैं, उनकी हालत सुधरती है। हर समय उन्हें लाभ प्राप्त होता है। हमारे आश्रम हैं, जो सुन्दर हैं, सस्ते हैं, वहां भोजन की सुविधा है, वहां उपलब्ध प्रत्येक सुविधा बढ़िया से बढ़िया है। वहाँ सब कुछ उपलब्ध है।

किन्तु हम नहीं सोचते यह सब पालन-पोषण किस लिए है? यह सब आशीर्वाद किस लिए है? यह है इस लिए कि आप ऊंचे उठें, आप पूर्ण रूप से दलदल से बाहर निकलें।

अब, आपको दृढ़ रहना है, आपको समर्पित रहना है, आपको श्रद्धालु रहना है। हमारे मन में अनेक 'किन्तु-परन्तु' (reservations) हैं। हम छुपाव रखते हैं। हम अत्यधिक चातुरी दिखाते हैं। यह खतरनाक स्थिति है। आप सब अपने भीतर देखें, कौन से पूर्व-संस्कार आपके पूर्ण समर्पण में बाधक हैं, किन कारणों से आप यह 'किन्तु-परन्तु' रखते हैं, कौन सा भय, कौन सा अहंभाव, कौन से चरित्र-वैचित्र्य (angularities) अभी भी दलदल में धकेल रहे हैं। कौन सी आसक्तियां, कौन से नाते बाधक हैं। आपको अपने को इन सबसे अलग करना है। जब तक आप पूर्ण रूप से इससे (दलदल से) बाहर नहीं निकलते, काम नहीं बनने वाला।

अधपकी चीजों के लिये यहां जगह नहीं। सवाल है, अभी या कभी नहीं। यह यीशु क्राइस्ट ने कहा था। उन्होंने कहा था, "तुम मुझे अपनी श्रद्धा और समर्पण दो और बाकी मुझ पर छोड़ दो।"

मैं जानती हूँ श्रद्धा और समर्पण में कौन आगे बढ़ रहे हैं। मैंने देखा है लोग खूब सुधर रहे हैं। मेरे सामने आने, प्रत्यक्ष मिलने की आवश्यकता नहीं। मेरी शारीरिक उपस्थिति आवश्यक नहीं। सब कुछ सर्वत्र-व्याप्त शक्ति में वर्तमान है। यही मेरी जीवन-प्रणाली है और वह तुम्हारे विषय में एक-एक बात जानती है। और एकमात्र अपनी भक्ति, अपनी श्रद्धा और समर्पण के द्वारा तुम मुझे पा सकते हो।

तुम्हारी दैवी शक्तियों का सम्पूर्ण उदीयमान होना (manifestation) ही मुझे पाना है। यह बड़ा सुगम है, इसे सुगम बनाया गया है। मैं उनसे प्रसन्न होती हूँ जो सरल, भोले, निश्छल, प्रेम-पूर्ण और परस्पर स्नेह युक्त होते हैं। मुझे प्रसन्न करना बड़ा आसान है। जब मैं तुमको परस्पर प्रेम करते देखती हूँ, एक दूसरे की प्रशंसा करते देखती हूँ, परस्पर सहायता करते, परस्पर आदर करते, एक साथ खुलकर हंसते, परस्पर संसर्ग में आनन्द अनुभव करते देखती हूँ, तब मुझे अपना पहला वरदान, पहला आनन्द प्राप्त होता है।

समर्पण भाव में परस्पर प्रेम करने की कोशिश करो, क्योंकि तुम सब मेरी सन्तान हो, मेरे प्रेम से सृजित किए गये हो। मेरे प्रेम के गर्भाशय में तुम सबने वास किया है। अपने हृदय से मैंने तुम्हें ये आशीर्वाद दिये हैं। किन्तु मैं विचलित हो जाती हूँ और मेरे हाथ कांपने लगते हैं और तुम फिर से दलदल में गिर पड़ते हो, जब मैं तुम को परस्पर झगड़ते देखती हूँ, ईर्ष्या और क्षुद्रताओं में लिप्त, ऐसी चीजें जो आपके विगत जीवन की साथी थीं। आपको मिलने वाली सहायता इतनी स्थूल नहीं है बल्कि वह बड़ी गहन सुरक्षा की अनुभूति है, जो आपके भाई बहनों को प्रदान की जाती है। आपमें गहन प्रेम होना चाहिये। स्वार्थ-भाव के लिये सहजयोग में बिल्कुल स्थान नहीं। इसी तरह कंजूसी के लिये सहजयोग में स्थान नहीं, वह नहीं चल सकती। कंजूसी एक संकुचित मस्तिष्क की निशानी है। मैं यह नहीं कहती आप मुझे रुपया दें। किन्तु धन के प्रति हमारी दृष्टि, उससे हम कैसे चिपके रहते हैं, भौतिक पदार्थ, सम्पत्ति, वस्तुएं इत्यादि।

आपकी महानतम निजी वस्तु (सम्पदा) है आपकी माँ। उसके द्वारा ही आपको ये अपने भाई बहन मिले हैं।

अपनी उस पुरानी जिन्दगी से बाहर निकल आओ—वह बीती जिन्दगी, वह दलदल। अब उसका अन्त होना चाहिये। तुम भली भांति समझते हो कैसे मैंने अपने प्रेम की शक्ति से तुम सबको बचाया है। तुम जानते हो कैसे मैंने एक एक क्षण तुम्हें सहायता की है। तुम्हारी प्रत्येक इच्छा पूरी करने के लिये मैं आगे आई हूँ। जैसा मैंने कहा, यह एक तरफ की बात है—पोषण, संवर्धन। किन्तु अब तुम्हारी उन्नति। वह तुम्हारी ओर से आनी चाहिये। तुम्हारा उत्थान, उसके लिये तुम आगे बढ़ो। वह तुम्हें स्वयं क्रियान्वित करना होगा। कोई अन्य सहजयोगी अथवा मेरे द्वारा वह नहीं होगा। मैं तुम्हें केवल सुझाव दे सकती हूँ। इतना ही नहीं, चेतावनियां भी देती हूँ। और सब कुछ आपके पास ही है। ऐसी सुन्दर व्यवस्था है। मुझे सब पता रहता है। पहले से मैं जानती हूँ। तुम्हें कहीं जाने की जरूरत नहीं। सब कुछ तुम्हारे भीतर ही है। तुम्हें रुपया-पैसा नहीं देना, कुछ नहीं देना। बस अपने अन्दर वह समर्पण जाग्रत कर लो।

देखो, यह सज्जन जिन्होंने मुझसे भेंट (interview) की, कहते थे कि बेरोजगार लोगों को राजनीतिज्ञ मनमाना नचाते (manoeuvre) हैं। आप अपने आपको परमात्मा को समर्पित कर दें, "प्रभु आपकी जैसी रुचि हो हमें नचायें।" किन्तु कैसे ? मानो मेरे हाथ में एक ब्रुश है और मैं कुछ चित्रण करना चाहती हूं। और यदि ब्रुश चलने में कठिनाई उत्पन्न करता है, टेढ़ा-मेढ़ा है, परेशान करता है, प्रयोग में असुविधाजनक है, बेढंगा बेडौल है, तो आप उससे कैसे काम करेंगे। आपको बेडौल बनाने वाले समस्त विचार, आपकी सारी समस्याएं, आपकी सारी बाधाओं से मुक्ति पाने का सुगमतम उपाय है समर्पण।

अब स्वयं अपने भीतर झांकें और देखें, क्या

आप समर्पण-मय हैं ? जो मेरा अंधानुसरण करते (fanatically adhering) हैं, वे भी सही नहीं हैं। अंधानुसरण ठीक नहीं। सब कुछ तर्क-संगत रूप से सामने आता है, अंधानुसरण बिल्कुल नहीं।

जैसे कोई कहता है, "मुझे डाक्टर के पास जाना है।" किन्तु अन्धानुयायी कहेगी, "मैं डाक्टर के पास नहीं जाऊंगी, क्योंकि माँ ने कहा है वह मेरी देख भाल करती है।" और जब वह अन्धानुयायी बीमार पड़ जाती है तब वह माँ के पास आकर लड़ती है, "माँ आपने कहा था आप मेरी देख भाल करती हैं। फिर मैं कैसे बीमार पड़ गई ?" यह अन्धानुसरण है।

और 'समर्पण' क्या है ? भीतर, हृदय की गहराई से आप कहते हैं, "सब कुछ माँ है। वह विद्यमान है। वही मेरी डाक्टर है, वह मेरी चिकित्सा करती है या नहीं, मैं स्वस्थ होता हूँ या नहीं, इस बारे में मुझे कुछ नहीं कहना। मैं केवल माँ को जानता हूँ। अन्य किसी को मैं नहीं जानता।" यह अत्यन्त युक्ति संगत है। आप युक्ति पूर्वक जानते हैं कि माँ अधिकतम शक्तिमान हैं—यह सत्य है। और यदि यह सत्य है, वह मुझे स्वस्थ कर देगी। किन्तु यदि वह मुझे रोग-मुक्त नहीं करती तो वह जाने, यह उनकी इच्छा, उनकी शक्ति है। यदि वह मुझे स्वस्थ करना चाहती हैं, तो वह कर देगी। यदि वह ऐसा नहीं चाहती तो मैं अपनी इच्छा क्यों उस पर थोपूं ?

श्री गणेश का समर्पण देखिये। जब उनकी माँ ने कहा, "अच्छा, कार्तिकेय और वह, दोनों भाइयों में जो धरती माता की परिक्रमा पहले करेगा उसे प्रथम पुरस्कार मिलेगा। अब बेचारे गणेश के पास वाहन के रूप में एक छोटा चूहा था। किन्तु उनके पास बुद्धि थी। और कार्तिकेय के पास एक अत्यन्त द्रुतगामी (तेज चलने वाला) मोर था, जो उड़ता था। श्री गणेश ने मोर की ओर देखा और कहा, "मेरी माँ से बड़ा कौन है ? वह आदि-शक्ति हैं। यह पृथ्वी क्या है ? इसे किसने बनाया ? मेरी माँ ने बनाया है। सूर्य को किसने बनाया ? मेरी माँ ने बनाया। मेरी माँ से बड़ा कौन है ? कोई नहीं। फिर क्यों न अपनी माँ की ही परिक्रमा कर लूं ? सारी पृथ्वी के चारों ओर परिक्रमा लगाने की आवश्यकता क्या है ? और कार्तिकेय के परिक्रमा लगाकर आने से बहुत पहले वह अपना पुरस्कार लेकर विराजमान थे।

उनके सरल भाव, भोलेपन ने उन्हें यह समझने की बुद्धि दी। यही युक्ति संगत है। यह अत्यन्त युक्ति पूर्ण है। और यह भी युक्ति संगत है कि मेरा दर्द मैं जितना अनुभव करता हूँ उससे अधिक मेरी माँ करती है। जब यीशु को सूली पर चढ़ाया गया, तब उनकी माँ के विषय में आप क्या कहेंगे ? वह स्वयं महालक्ष्मी थीं, अति शक्ति सम्पन्न। अपने पुत्र को उन्होंने अपने जीवन का बलिदान करते देखा, मानव की भाँति कष्ट भोगते देखा। यह कितनी बड़ी बात है ! अपने पुत्र को स्वयं की बलि देते देखा जबकि यह सब समाप्त कर देने की सारी शक्तियाँ उनके हाथ में थीं। किन्तु यह एक बड़ा नाजुक काम था, इस आज्ञा चक्र को निर्माण करने का।

इसका क्या अर्थ है ? क्या इसका अर्थ है उसकी श्रद्धा में कुछ कमी थी ? इसके विपरीत, उनको (माँ को) उन पर इतना विश्वास था कि वह (माँ) उनसे ऐसा करने को कह सकती थी।

जब माँ से अपना कुछ काम करवाना चाहते हैं तो कुछ लोग कहते हैं, "माँ, मैं ये शोध-निबंध (thesis) दे रहा हूँ। मुझे सफलता देना।" "अच्छा बंधन दो," "और आप सफल हो जाते

हैं। "माँ मैं यह खोज करने की कोशिश कर रहा हूँ।" अच्छा, तथास्तु। "माँ, मैं यह रोजगार पाना चाहता हूँ।" तथास्तु। यह विपरीत क्रम है।

कितनों में यीशु जैसा समर्पण है? किसी में नहीं। यह सत्य है। वह सबसे बड़ा भाई क्यों है? क्योंकि उसके समान कोई नहीं है। उसने वह सब दर्दनाक कष्ट सहन किये, क्योंकि वह अपनी माँ के अभिन्न अंग थे। उससे (पुत्र से) उन्होंने (माँ ने) बहुत अधिक कष्ट भोग किया। वह भी उस वेदना में से गुजरी—एक अधिक महान ध्येय, अधिक आनन्द, अधिक महान, अधिक ऊंचे जीवन के लिए। यह सच्चा समर्पण है।

किन्तु ये छली लोग इसका लाभ उठा सकते हैं। जब वे लोगों को यातना देते हैं तो कहते हैं आखिर आपको कष्ट भोगने हैं। देखिये वे कैसी बात बनाते हैं। वे कहते हैं आपको कष्ट भोगना आवश्यक है क्योंकि अन्यथा आपका कार्य नहीं हो सकता। अतः कष्ट भोगना आवश्यक है।

यह अत्यन्त सूक्ष्म समझने वाली बात है, अत्यन्त सूक्ष्म। आपको इससे स्पष्ट हो जायगा कि पहले आपका पोषण किया जाता है, आपको ऊपर उठाया जाता है, आपका प्रशिक्षण होता है, आपको सही किया जाता है। और उसके पश्चात आप जो कुछ करते हैं—कष्ट सहन आदि आपके लिये कष्ट नहीं रह जाते क्योंकि आपका 'आत्मा' में रूपान्तर हो गया है:

नैनं छिदन्ति शस्त्राणि, नैनं दहति पावकः।
न चैनं क्लेदयन्तापो, न शोषयति मारुतः॥

इसे (आत्मा को) किसी शस्त्र द्वारा मारा नहीं जा सकता, हवा इसे फेंक नहीं सकती अथवा उड़ा नहीं सकती, अग्नि इसे जला नहीं सकती। इसे किसी तरह नष्ट नहीं किया जा सकता।

आप अब ऐसी आत्मा हैं। अतः आपका पोषण कार्य हो चुका है, आप बड़े हो गये हैं, पुष्ट हैं। जब लोग सहजयोगियों को देखते हैं तो कहते हैं, ये कैसे फूलों जैसे हैं। इनके चेहरे चमकते हैं। कैसे आत्म विश्वास युक्त, कितने सम्भ्रान्त, कैसे सुन्दर! किन्तु यह सब (पोषण) किसलिए? इसलिए कि आप परमात्मा के रथ के पहिये बनें। आपको सारा भार उठाना है और आत्म-बलिदान—जो आपके लिये अब बलिदान नहीं रहा। क्योंकि 'आत्मा' (अब आप आत्मा में परिणत हो चुके हैं) केवल देता है, कभी खोता (sacrifices) नहीं। 'देना' इसका गुण है। अतः आप कुछ खोते नहीं, आप केवल देते हैं।

माँ पहले प्रसव की पीड़ा सहती है। ठीक है। सब तरह के कष्ट सहती है। ठीक है। किन्तु जब बच्चा बड़ा हो जाता है तो वह माँ के साथ खड़ा होता है, उसको सहारा देता है, गौरवशाली पुत्र बनता है। उसका (पुत्र का) वह (माँ) अभिमान अनुभव करती है। उसका (पुत्र का) उसे (माँ को) अभिमान है और उसका (माँ का) उसे (पुत्र को) अभिमान है। वे एक साथ खड़े होते हैं और एक साथ लड़ाई लड़ते हैं। यह तभी सम्भव होता है जब आप पूर्ण समर्पण और एक सहजयोगी के भावी जीवन की तैयारी के लिये आगे आयें—ऐसा जीवन जो बाहर से एक संग्राम (लड़ाई) सा दीखता है किन्तु भीतर अत्यन्त कृतार्थकारी (fulfilling) है। एक समय था जब मेरे पास जो सहजयोगी आते थे उनके लिये धरती पर बैठना भी एक बहुत बड़ी बात (त्याग) थी। इसी भांति जूते उतार कर बैठना एक बड़ा त्याग था। कल कार्यक्रम में तीन व्यक्ति जूते उतार कर बैठने की बात पर उठ कर चले गये, जैसे कोई उन्हें गंजा (bald headed) कर रहा हो।

किन्तु सहजयोग में क्यों ऊंचे उठना, बढ़ना,

खड़े होना—एक महान माँ की महान सन्तान के रूप में ! काम महान है, दुर्दान्त है। यह ऐसे-वैसे, मंझोले लोगों के करने का काम नहीं है। पिचके गालों वाले, डरपोक अहंकारी भीरु इसे नहीं कर सकते। उनमें आवश्यक वीरत्व (mettle) नहीं है।

अतः ध्यान में समर्पण, ध्यान में पूर्ण समर्पण का अभ्यास करना चाहिये। अब यह तुम्हारे अपने तथाकथित सकुचित 'अपने' हित के लिये तुम नहीं कर रहे हो। पहले तुम एक नन्हें शिशु थे—बालक। अब आप एक समग्र पुरुष (collective being) हैं। अतः अब आप 'अपने' लिये कुछ भी नहीं करते, वरन उस समग्र पुरुष के लिये करते हैं। आप उस समग्र की चेतना में उतरने के लिये ऊंचे उठ रहे हैं जो (समग्र पुरुष) आप बनने के पथ पर हैं। आपका काम, आपका रुपया, आपकी पत्नी, आपके पति, बच्चे, पिता, माता, रिश्तेदार—ये सब बातें अब समाप्त हैं। अब आप सबको सहजयोग का कार्य-भार संभालना है। आपमें से प्रत्येक पूर्ण सक्षम है। आपको उसके लिये तैयार किया गया है। आप जिस प्रकार उचित समझें, आपकी जैसी भी क्षमताएं हों, वैसे करें। बस आपका पूर्ण समर्पण काम करेगा। 'समर्पण' ही सार है। पूर्ण समर्पण द्वारा ही आप और ऊंचे उठ सकते हैं।

कुछ सहजयोगी हैं जो अधपके हैं। उन्हें हम छोड़ दें। उन्हें हम अपने साथ नहीं रख सकते। उनके प्रति आप सहानुभूति न रखें। वे बेकार हैं। यदि वे ठीक सिद्ध हुए तो हम उन्हें दुबारा अपने साथ ले लेंगे। किन्तु यह काम आप मुझ पर छोड़ दें। आप उनकी ओर अपना ध्यान अथवा प्रयत्न न करें। आपको ऊंचा उठना है। आप साधक (seekers) थे, तभी आपको यह मिला है, आपने उन्नति की है, आप ऊंचे उठे हैं। यह किस लिए ? इसलिए कि आप खड़े हों। जैसे मैं आज आपके सामने खड़ी हूँ, आपको दूसरों के सामने खड़ा होना है, सर्वसाधारण के सामने खड़ा होना है।

समर्पण का अर्थ यह नहीं कि आप सहजयोग की चर्चा न करें। बहुत लोग सोचते हैं शान्त, चुपचाप रहना ही समर्पण है। केवल ध्यान में शान्त रहना चाहिये। किन्तु बाद में तो उस स्थिति (ध्यान में शान्त) से बाहर आना होता है।

सारे राष्ट्रों और सारे लोगों से यह महान संदेश कह दो कि पुनरुत्थान (Resurrection) का समय आ गया है—अभी, इसी समय। और आप सब यह कार्य (महान संदेश को फैलाना) करने के योग्य हैं। यदि इसके लिए कोई आपका मजाक उड़ाता है तो उसे समझदारी और बुद्धिमानी से बातें बताओ। व्यक्तिगत रुचियों, अरुचियों को त्यागना चाहिये। "मैं ये पसन्द करता हूँ, मैं वह पसन्द करता हूँ।" ऐसी बातें छोड़ देनी चाहिये। इसका अर्थ यह नहीं आप मशीन की भाँति हो जायं। नहीं। किन्तु यह "मैं" की दासता को छोड़ना चाहिये। आदतों की दासता समाप्त होनी चाहिये। आपको आश्चर्य होगा, आपमें समर्पण जाग्रत होने पर आप अधिक नहीं खायेंगे, कभी कभी आप बिल्कुल नहीं खायेंगे, खाने की बात ध्यान रहना भी जरूरी नहीं। आपको ध्यान नहीं रहेगा आपने क्या खाया, आप कहां सोये, कैसे सोये यह भी आपको ध्यान नहीं रहेगा। यह एक दूरबीन जैसी जिन्दगी होगी—फैलती हुई। आप अपने सपने (visions) सृजन करेंगे, उन्हें पूर्ण करेंगे, क्रियान्वित करेंगे। आप ऐसे सरल, साधारण व्यक्ति दीखते हैं, किन्तु आप ऐसे नहीं हैं। समर्पण में, पूर्ण समर्पण में अब आपको यह कार्य करना है, अपने निजी हित, अपनी निजी उपलब्धि के लिए नहीं—वह तो समाप्त हो चुकी है। यह करना है दलदल से पूरे बाहर निकलने के लिए, धरती पर खड़े होकर परम पिता परमेश्वर की ऊंचे स्वर

में स्तुति-गान करने के लिये। जो दलदल में फंसे हैं वे क्या संगीत दे सकते हैं? क्या गान गा सकते हैं? क्या सुरक्षा दे सकते हैं? क्या दूसरों की सहायता कर सकते हैं? आपको उससे पूरा बाहर निकलना है। उसके लिये सुदृढ़ बुद्धिमत्ता चाहिये, स्थिर, प्रत्येक क्षण। उसके लिए अपने बांये पार्श्व (इड़ा नाड़ी) अथवा दांये पार्श्व (पिंगला नाड़ी) को दोष देने की आवश्यकता नहीं। बिल्कुल नहीं। आप बस बाहर निकल आयें। इसे मजबूती से पकड़ लें। आपकी देखभाल करने के लिये परब्रह्म आये हैं। इनको पकड़े रहें। मृत्यु को भी वापस जाना होगा। फिर इन छोटी-छोटी बातों की क्या गिनती?

अब आपकी मां का नाम बड़ा शक्तिशाली है। आपको पता होना चाहिये यह अन्य सब नामों से शक्तिशाली है। सबसे शक्तिशाली मन्त्र है। किन्तु आपको जानना चाहिये इसे कैसे उच्चारण करना चाहिये। अन्य किसी नाम जैसे नहीं। आप जानते हैं भारत में जब लोग अपने गुरु का नाम लेते हैं तो अपने कान पकड़ते हैं। इसका अर्थ है कि यह नाम उच्चारण करते समय यदि मैं कोई भूल चूक कर रहा हूं, तो कृपया क्षमा करें। यह अत्यन्त शक्तिशाली मन्त्र है। केवल आपको समर्पण की जरूरत है—समर्पण का बारूद।

आज मैंने कहा, "इंग्लैण्ड में अब डेजी-फूलों में सुगंध होती है।" उस महिला को विश्वास नहीं हुआ। वह बोली, "मैंने तो ऐसा कभी नहीं देखा। इसके विपरीत मेरा तो अनुभव है डेजी में कोई सुगंध नहीं होती और वे अजीब गंध के फूल होते हैं।" मैंने कहा, "अच्छा, ये डेजी तुम लो, इनको सूंघ कर देखो।" जब उसने उन्हें सूंघा तो वह चकित रह गई! आश्चर्य! कैसा सूक्ष्म! आज वे इंग्लैण्ड में सबसे अधिक सुगंध वाले फूल हैं। केवल नाम, जिसका अर्थ है निष्कलंक, अर्थात निर्मल, मतलब बिल्कुल मल (विकार)-शून्य, स्वच्छ। यह 'मल' क्या है? यह, यह दलदल है। दलदल से मुक्त, निः! अर्थात पूर्णता। बहुत पहले से सहस्रार के आनन्द को 'निरानन्द' कहते हैं। प्राचीन काल से इसे निरानन्द या निर्मला आनन्द कहा जाता है। बहुत लोग इसे निर्मला-आनन्द या निरानन्द कहते हैं। यह आनन्द वह आनन्द है जो आप सूली पर चढ़ते समय भी अनुभव करते हैं। यह आनन्द वह आनन्द है जो आप, जब आपको विष दिया जाता है उस समय भी अनुभव करते हैं। अपनी मृत्यु-शय्या पर लेटे भी आप उस आनन्द का अनुभव करते हैं। वह आनन्द है निरानन्द।

अतः दूसरे चरण (phase) के लिये तैयार हो जाओ। आप मोर्चे पर (आगे) हैं। मुझे बहुत कम समय चाहिये। किन्तु मुझे दृढ़ बुद्धिमत्ता और समर्पण वाले लोग चाहिये। दृढ़। जो एक क्षण के लिये भी इधर या उधर विचलित न हों। अब हम तेजी से प्रगति कर सकते हैं और लड़ाई लड़ने के लिये आगे बढ़ सकते हैं। शायद अब आप असद्-प्रवृत्तियों (बाधाओं) की सूक्ष्मताओं से परिचत हो गये हैं। कैसे वे अपनी शक्ति—जो निस्सन्देह सीमित है—परमात्मा के कार्य को नष्ट करने में उपयोग करती हैं। और कैसे आपको सचेत, सुसज्जित (equipped) और समर्पित रहना है। यह बात मैं केवल आपसे बता सकती हूं। यह मैं कैक्स्टन हाल में आने वाले सर्व-साधारण लोगों को नहीं बता सकती। उनमें से कुछ अधपके होते हैं, कुछ बिल्कुल नये, भोले-से, और कुछ बिल्कुल बेकार। किन्तु यहां, आज जो आप मेरे सामने उपस्थित हैं, मैं आपसे बहुत स्पष्ट बताना चाहती हूं, जैसा कृष्ण ने अर्जुन से कहा था, "सर्व धर्माणां परित्यन्य मामेकं शरणं व्रज।" इसके अलावा दूसरा रास्ता नहीं है। 'व्रज' माने जिसने दूसरी बार जन्म लिया है। एक ठोस व्यक्तित्व, एक ठोस पदार्थ की भांति। जब आप ठोस होंगे, तभी आपका समर्पण होना चाहिये। जब आप पक्के, परिपक्व,

तभी आपको समर्पण करना चाहिये।

यह आपको दलदल से बाहर निकलने में सहायक होगा और तब यह उस महान कार्य में सहायक होगा। कोई नहीं समझता माँ क्यों मेरी सहायता करने की कोशिश कर रही हैं। वे समझते हैं माँ बड़ी उदार है। किन्तु ऐसी बात नहीं। मैं बहुत समझदारी रखती हूँ। क्योंकि आप ही वह लोग हैं जो ईश्वरीय आनन्द को इस पृथ्वी पर चरितार्थ (manifesting) करने में समर्थ हैं। आप वह बांसुरी हैं जो परमात्मा का संगीत गान करेगी। परमात्मा आपको उपयोग करेंगे और अपनी इच्छानुसार घुमायें-फिरायेंगे, कार्य करवायेंगे। मैं आपको पूर्ण सुयोग्य (perfect) बनाने के लिये यह सब कर रही हूँ जिससे आप परमात्मा के परम सुन्दर यन्त्र बन सकें, परमात्मा के सही यन्त्र बन सकें। मुझे पता नहीं कि आप समझते हैं कि वह जीवन कितना मधुर और सुन्दर होगा, समर्पण का जीवन, समझ के साथ, युक्ति संगत। पूर्ण समर्पित, समस्त पोषण अर्जन करने वाला और उसे अधिक ऊंचे उद्देश्य के लिये समर्पित करने वाला जैसे कुछ पत्ते सूर्य की किरणें खींचते हैं, अपने में रंग ग्रहण करते हैं, ऊंचे ध्येय के लिये कि जिससे बाद में वे मानव द्वारा उपयोग में लाये जा सकें। इस पृथ्वी पर इस पद्धति के विपरीत कोई कार्य नहीं होता। सब कुछ किसी उद्देश्य के लिये होता है, किसी निःस्वार्थ, विस्तीर्ण, एक महान गतिशील (dynamic) उद्देश्य के लिये घटित होता है।

आप सागर बन जाते हैं, आप चन्द्रमा बन जाते हैं, आप सूर्य बन जाते हैं, आप पृथ्वी बन जाते हैं, आप आकाश (ether firmament) बन जाते हैं और आप आत्मा बन जाते हैं। आप उन सबके लिये कार्य करते हैं। समस्त तारागण और भूमंडल आप बन जाते हैं और उनका कार्य करने लगते हैं। ऐसी स्थिति है। क्योंकि आप उतर कर अपने तत्व पर आ बैठे हैं। उसी भांति आप प्रत्येक के तत्व पर उतर कर स्थित हो जाते हैं। किन्तु उस तत्व पर समर्पित हों, क्योंकि इन सबका मैं तत्व हूँ। मैं तत्व हूँ, तत्वमय हूँ। अपने तत्व पर स्थित रहें।

मैं कुण्डलिनी हूँ। मैं सार हूँ। एक स्थूल दीखने वाली। जो स्थूल रूप से बड़ी दिखती है, ऐसी वस्तु के प्रति समर्पण हमारी समझ में आ जाता है। किन्तु हम एक ऐसी वस्तु के प्रति समर्पण नहीं कर पाते तो इतनी सूक्ष्म (भाव), इतनी सूक्ष्म (आकार) जो इतनी गहन है, इतनी गतिशील, इतनी विश्व-व्यापी और इतनी सनातन है। उसको समर्पण करने की हम नहीं सोच सकते। हम उस आदमी के सामने समर्पण कर देते हैं जो एक पर्वत जैसा भीमकाय दीखता है, जो पर्वत की तरह हम पर अत्याचार करने आता है, जो हिटलर जैसा दिखता है, जो झूठे, कपटी गुरु जैसा होता है। किन्तु अपने सूक्ष्म पुरुष (व्यक्तित्व, being) को समर्पण करना, जिसे आप अपनी आंखों से नहीं देख सकते, जिसे (कान से) सुन नहीं सकते, किन्तु जो वास्तव में विभक्त किये गये (split) एटम बम की भांति इतना शक्तिशाली है। विभक्त होने (split) से पहले यह सब जगह रहता है। किन्तु सूक्ष्मता के चरम बिन्दु पर यह इतना गतिशील (dynamic) होता है कि जब आप इसे (अपने सूक्ष्म स्वरूप को) अपना लेते हैं तो यह ऊर्जा की ऐसी गतिमान शक्ति में परिणत हो जाता है। क्योंकि आपका चित्त विश्व के सूक्ष्म स्वरूप में पैठ (पहुँच) चुका है, अतः आप गहरे, और अधिक गहरे उतरते जायें। धरती जो जड़ के निचले सिरे को पानी के उद्गम-स्थल (source) पर ले जाती है, उस उद्गम स्थल से अभिन्न है। आपकी कुण्डलिनी आदि कुण्डलिनी से अभिन्न है और इसकी शक्ति परब्रह्म है।

ये सब बातें आत्म-साक्षात्कार और परिपक्वता के बाद ही समझी जाती हैं। उससे पहले सम्भव नहीं। इसी कारण पिछले आठ साल ये सब बातें मैंने आपसे नहीं कहीं। मेरी आपके साथ बड़ी लुभानी और मीठी व्यवहार शैली थी। और मैं आपको ऐसा दिखाती थी कि जैसे आप मुझ पर उपकार कर रहे हैं यद्यपि इसमें आपका मुझ पर कोई उपकार नहीं है।

इन सब विचारों को पार कर आप अपनी 'आत्मा' बन गये हैं, तैयार, उत्तरदायी (responsible) बनने के लिये, आपको जिस लिए बनाया गया वह भूमिका ग्रहण करने के लिए। जैसे जहाज बनाया जाता है, समुद्र पर लाया जाता है, उसका परीक्षण होता है और समुद्र में यात्रा के लिये उपयुक्तता देखी जाती है। अतः अब यह दूसरा चरण (phase) है जब आपको यात्रा पर प्रस्थान करना है, जब आपको जहाज का और समुद्र का सम्पूर्ण ज्ञान प्राप्त हो गया है। पूर्ण स्वतन्त्रता और बुद्धिमानी से अब आपको अपनी यात्रा करनी है, तूफान, आंधी आदि से निर्भीक, क्योंकि अब आप पूर्ण ज्ञान रखते हैं। आपका काम है पार पहुँचना।

आपको अनन्त आशीर्वाद।

★ निर्मल वाणी ★

हमें इस शरीररूपी मन्दिर की देखभाल के लिए अपना प्रधान कर्तव्य समझकर सतत प्रयत्न करते हुए कार्यान्वित होना है। पर यही आपकी जिन्दगी का लक्ष्य नहीं होना चाहिए। वह एक अत्यन्त छोटा-सा हिस्सा है अपनी जिन्दगी का, जैसे तमाम जगह स्वच्छ कर आप बाहर आ जाते हैं। यदि आपको कोई समस्या है तो उसे भूल जाइए। क्रमानुसार आपकी दशा में सुधार आ जाएगा। मुख्य बात तो यह है कि अपनी आत्मा में रहें, संतुष्ट रहें। बारम्बार आग्रह न करें कि माँ हमें ठीक करें। परन्तु कहना चाहिए "माँ हमें आध्यात्मिक जीवन में स्थापित रखिए।" आप स्वतः स्वेच्छानुरूप से आरोग्य हो जाएंगे।

❀ ❀ ❀

माया के बगैर चित्त की तैयारी नहीं होती। इसीलिए इस माया से डरने के बजाय उसे पहचानिए। तब वही आपका मार्ग प्रकाशित करेगी। जैसे सूर्य को बादल ढक देते हैं और उसके दर्शन भी करा सकते हैं। माया मिथ्या है यह जानते ही वह अलग हट जाती है, और सूर्य का दर्शन हो जाता है। सूर्य (ब्रह्म, सत्य) तो सदा सर्वदा है ही, परन्तु बादल (माया) का काम क्या होता है? बादलों की वजह से ही मन में सूर्य-दर्शन की तीव्र इच्छा पैदा होती है। फिर सूर्य क्षणभर के लिए चमकता है और छिप जाता है। इस कारण आँखों को सूर्य देखने की ताकत और हिम्मत आती है।

❀ ❀ ❀

परमपूज्य माताजी श्री निर्मला देवी जी

सहजयोगियों के लिये भारतीय सभ्यता एवं संस्कृति का महत्त्व

दिल्ली
२५-३-१९८५

आज नवरात्रि के शुभ अवसर पर सबको बधाई।

सहजयोग के प्रति जो उत्कण्ठा और आदर प्रेम आप लोगों में है, वो जरूर सराहनीय है, इसमें कोई शंका नहीं। क्योंकि जो हमने उत्तर हिन्दुस्तान की स्थिति देखी है, वहाँ पर हमारी परम्परागत जो कुछ धारणाएं हैं, उसी प्रकार शिक्षा प्रणालियाँ हैं—सब कुछ खोई हुई हैं। बहुत कुछ हम लोगों का अतीत मिट चुका है और हम लोग एक उधेड़-बुन में लगे हुए हैं कि नवीन वातावरण, जो कि तीन सौ साल की गुलामी के बाद स्वतंत्रता पाने पर तैयार हुआ, वो एक बहुत विस्मयकारी जरूर है, लेकिन विध्वंसकारी भी है। माने कि जैसे कि हम अपने मूल-भूत तत्त्वों से उखड़ से गए हैं। उनका सिंचन नहीं हुआ, ये बात जरूर है, लेकिन हमारा भी रुझान ज्यादा बाह्य की ओर रहा—ये उत्तर हिन्दुस्तान पर एक तरह का शाप-सा है।

उत्तर प्रदेश में मैं सोचती हूँ कि सीताजी के साथ जो दुर्व्यवहार किया गया, उसके फलस्वरूप अब मेरे ख्याल से धोबियों का ही राज शुरू हो गया है। और बड़ी दुख की बात है कि जब आप उत्तर प्रदेश में सफ़र करते हैं तो देखते हैं कि लोगों में बड़ा उथलापन, अधूरापन, अश्रद्धा, अनास्था आदि इतने बुरे गुण आ गए हैं कि लगता नहीं है कि वहां कभी सहजयोग पनप सकता है।

दूसरी बात बिहार, पंजाब, हर जगह ये पाया जाता है कि हम अपने को कहलाते हैं कि हिन्दू या भारतीय हैं, लेकिन हम अपनी संस्कृति से पूरी तरह अनभिज्ञ हैं। हम कुछ भी नहीं जानते कि हमारी जड़ें क्या हैं? किस जड़ के सहारे हम खड़े हैं?

दूसरों की जड़ें अपने अंदर बिठा कर हम पनप नहीं सकते और जो हमारी जड़ें हैं वो इतनी महत्त्वपूर्ण हैं कि उसी से सारे संसार की जड़ें प्लावित होंगी। उसी से वो उच्च स्तर पर उठेंगी।

लेकिन यहां का मानव ऐसा कुछ अजीब वातावरण में है, कि न इधर के हैं न उधर के हैं, और जब भी मैं अन्दर देखती हूँ, तो बड़ा आश्चर्य होता है कि जो गहनतम विशेषताएं दक्षिण में हैं, वो यहां एकदम खो सी गई हैं। इस ओर हमें चिन्ता करनी चाहिए और ध्यान देना चाहिये कि हमने ये सब क्यों खो दिया? जो हमारा इतना महत्त्व-पूर्ण ऊंचा था, उसे हमने क्यों त्याग दिया।

उससे तो मैं सिक्ख लोगों को ज्यादा मानती हूँ, क्योंकि कुछ नहीं तो कुछ न कुछ तो वो जानते हैं अपने धर्म के बारे में। ऐसा कोई सिख आपको नहीं मिलेगा जो अपने धर्म के बारे में कुछ भी न जानता हो। लेकिन ऐसे आपको हजारों-हजारों हिन्दू मिल जाएंगे जो कुछ भी नहीं जानते और उसमें उनको कोई हर्ज भी नहीं है। इसका एक फ़ायदा

जरूर होता है कि जब धर्म बहुत ज्यादा संकलित होता है, organised (संगठित) होता है तो उसकी शृंखलाएं जरूर अटकाव रखती हैं, उससे आदमी अति पर जाकर fanatic (धर्मान्ध) हो सकता है, यह एक बात है। लेकिन दूसरी बात कि हम बिलकुल अनभिज्ञ हैं अपने धर्म के बारे में। अपने विश्वासों के बारे में और अपनी धारणाओं के बारे में होने से—अंग्रेजों को तो कह सकते हैं, परदेसी लोगों को कह सकते हैं कि आपको यह सीखना है, आपको यह जानना है, अपने गहरे में उतरना है—लेकिन हिन्दुस्तानियों को क्या कहा जाए? वो तो अपने को अंग्रेज ठहराए बैठे हैं! वो सोचते हैं कि हम तो बहुत ऊंची पदवी पर पहुँचे हुए हैं।

कितना उथला जीवन हम बिता रहे हैं! इसकी ओर हमारी दृष्टि नहीं। इसलिये हमारी संवेदना, जो आत्मा की है, वो गहन नहीं हो पाती।

आत्मा की संवेदना गहन है, उथली नहीं है। जो मनुष्य उथलेपन से जीता है, वो गहनता को कैसे पाएगा?

इस ओर ध्यान देना चाहिये कि इसे हमने क्यों खोया? और खोने पर अब हमारा सम्बन्ध इससे कैसे हो सकता है? हम किस तरह से अपने को गहनता में उतार सकते हैं?

एक तो धर्म के प्रति हमारी बड़ी उदासीनता है। मैं कोई बाह्य के धर्म की बात नहीं कर रही हूँ, ये आप जानते है, पर अंदर का धर्म होना बहुत जरूरी है। अन्दर का धर्म, माने संतुलित जीवन में वो सब चीजों में असर करता है। कोई कहेगा कि 'मां कपड़े पहनने से क्या होता है, वो तो जो है जड़ वस्तु है। सूक्ष्म में ही सब कुछ है।' अरे भाई! आप सूक्ष्म में जब जाओगे, तब जड़ को आप पाओगे। जब जड़ में भी आप इतने उच्छृंखल हैं, तो आप सूक्ष्म में कैसे उतरेंगे?

हमारी भारतीय संस्कृति की विशेषताएं जो हैं, उनको समझे बगैर ही बहुत लोग गलत काम करते हैं। जैसे कि हाथ में चूड़ी पहनना, एक छोटी सी चीज है। ये है, क्या चीज है आप जानते हैं? विशुद्धि के चक्र में स्त्री में कंकण होना चाहिये। पुरुष भी पहले कंकण पहनते थे। मेरे नाक में (नथ), ये शुक्र का तारा है, ये मुझे पहनना पड़ा। पहले पहना नहीं था बहुत दिनों तक। लेकिन समझ गई मैं, इसको पहने बगैर काम होगा नहीं, इसलिये पहना।

हर चीज हमारी संस्कृति में बहुत नाप-तोल और समझ से बनाई गई है। ये कोई किसी धर्म ने नहीं बनाई। ये द्रष्टाओं ने बनाई हैं, बड़े-बड़े ऋषियों और मुनियों की बनाई गई चीजें हैं, इसको हमें समझ लेना चाहिये।

हर चीज में, हर रहन-सहन में, बात-चीत में, ढंग में हमें पहले भारतीय होना चाहिये। जब तक हम भारतीय नहीं हैं, तब तक सहजयोग आप में बैठने वाला नहीं। क्योंकि जो परदेसी हैं, वो हर समय ये कोशिश करते हैं कि हम भारतीय लिबास में कैसे रहें, भारतीय तरीके से कैसे उठें-बैठें, बोलें। हर चीज वो ये देखते रहते हैं, और सीखते रहते हैं। कोशिश करते हैं।

आज ही हमारी बहू ने एक बात कही, कि 'जो सहजयोगी हमने foreign (परदेस) में देखे, उनकी जो आस्था और dedication (श्रद्धा, भक्ति) देखा, वो यहां के सहजयोगियों में नहीं है। यहां तो सहजयोगी सिर्फ बीमारी ठीक कराने आते हैं।' तो हिन्दुस्तानियों का भारतीय होना बड़ा कठिन दिखाई दे रहा है, बजाय इसके कि परदेसियों का।

एक तो बुद्धि में उनकी बड़ी शुद्धता है, और बहुत चमक है। उस बुद्धि से वो समझते हैं कि जो आज तक हम लोगों ने ये अहंकार के सहारे कार्य किये हैं, इनको छोड़ देना चाहिये, और सीधे सरल तरीके से जो भारतीयता हमेशा आत्मा की ओर निर्देश करती है, उसे स्वीकार करना चाहिये। वो इसे समझते हैं बहुत अच्छी तरह से और गहनता से और जिस चीज को समझते हैं और मानते हैं, उसको करते हैं। क्योंकि उनमें बड़ी समग्रता आ गई है। लेकिन हम लोग—माँ के सामने एक बात, बाद में दूसरी बात—'उसमें क्या हर्ज है, अगर इस तरह से रहा जाए, उस तरह से रहा जाए।'

आज मैं आपके सामने एक ही प्रस्ताव रख रही हूँ, क्योंकि आप जानते हैं, हमने 'विश्व निर्मल धर्म' की स्थापना की है। लेकिन विश्व धर्म जो है उसकी संस्कृति भारतीय है। संस्कृति बिलकुल, पूरी तरह से भारतीय है। उसमें कोई भी हम लवलेश नहीं करेंगे। जो भारत में आएंगे, उनको भारतीयों जैसे रहना पड़ेगा। क्योंकि ये संस्कृति हजारों वर्षों से बनाई गई है, सोच-समझ कर। इसमें जो गलतियां हैं, उसे ठीक करके। अनेक वर्षों से बिता करके, इसमें से जो कुछ भी दोष हैं, उसे निकाल करके, ये संस्कृति बनाई गई।

और इस संस्कृति में एक ही बात निहित है कि 'अपना चित्त हमेशा निरोध में रखो।' अपने चित्त का निरोध। अपने चित्त को रोकिये।

आप देख लीजिये दिल्ली शहर में कहीं भी जाइए, सबकी आँखें इधर-उधर घूमती रहती हैं हर समय। किसी की आंख में शुद्धता नहीं पाइएगा। वासना भरी हुई है, जिसे lust और greed कहते हैं।

चित्त का निरोध तभी हो सकता है कि जब हम इस तरह से अपना भी लिबास रखें, और दूसरों का भी लिबास इस प्रकार रहे जिसमें कि मनुष्य सौष्ठवपूर्ण हो, असुन्दर न हो। लेकिन उसमें वासनामय चीजें न हों।

जीवन के हर व्यवहार में हमारा जीवन अत्यंत सौष्ठवपूर्ण होना चाहिये। सौष्ठव का मतलब होता है—'सु' से आता है—जिसमें शुभदायी चीज हो, सबका मन पवित्रता से भर जाए। ऐसा स्त्री का स्वरूप, पुरुष का स्वरूप होना चाहिये, उनका व्यवहार होना चाहिये।

लेकिन हम उनकी जो बुरी बातें हैं पूरी तरह से सीख लेते हैं, और उनकी अच्छी बात है, तो हम नहीं सीख पाते। और अपने को ये समझ करके कि हम एकदम से बड़े भारी आधुनिक बन गए हैं, इस आधुनिकता के तो शाप हैं उनसे आप वंचित नहीं रहेंगे।

अपने बच्चों की ओर नजर करें। अपने बच्चों में भी भारतीयता आनी चाहिये। बच्चों में आदर, आस्था, भक्ति, नम्रता सब होनी चाहिये।..... अब आप महाराष्ट्र के बच्चे देखिये, सीधे बैठे रहते हैं। मैंने कभी नहीं देखा कि बच्चे इधर-उधर देख रहे हैं, ये कर रहे हैं, हंस रहे हैं, बोल रहे हैं—कभी नहीं। आप देखिये—शांति से, ध्यान में बैठे रहते हैं? अगर आप अंग्रेज बच्चों को देखिये, तो इतना दौड़ते हैं कि उनको सबको बाहर रखा जाता है, उनकी माँओं को भी बाहर रखा जाता है।

तो हमें जान लेना चाहिये कि, क्या बात है? सहजयोग इतना गहरा हमारे अन्दर क्यों नहीं उतर रहा। हमें अपनी ओर दृष्टि करके देखना चाहिये कि हम क्या स्वयं गहन हैं? हमारे अन्दर गहनता आई हुई है?

भारतीय संस्कृति को जरूर अपनाना होगा, पूरी तरह से, और उसकी पूरी इज्जत करते हुए,

जैसे बड़ों का मान करना। हमने सुना कि कोई सहजयोगी हैं, अपनी माता को बहुत सताते हैं, और बड़े भारी सहजयोगी हैं। ये कैसे हो सकता है ? सबके अधिकार होते हैं, सबका एक तरीका होता है। अगर माँ कोई ऐसी शैतान हो, या भूत-ग्रस्त हो, तब तो समझ में आई बात। लेकिन किसी भी माँ को सताना हमारी संस्कृति में मना है। भाई-बहनों से दूर भागना भी बिलकुल मना है।

दूसरी बात, अपने यहाँ कोई आदमी, कोई भी मेहमान घर में आए, उसके लिये हम लोगों को जान दे देनी चाहिये। इसके अनेक उदाहरण हैं। जो हमने खोया हुआ है, पूरा का पूरा हमें सहज-योग से लाना है। पन्नाधाय जैसी औरतें, जिसने अपने बच्चे को त्याग दिया। युवराज को बचाने के लिये जिसने अपने बच्चे को त्याग दिया। पद्मिनी जैसी स्त्री इतनी लावण्यपूर्ण थी। उन सब को याद करिये जिन्होंने अपनी जान देश की आन में मिटा दी। उस संस्कृति को छोड़कर के आप किसी भी तरह से सहजयोग में पनप नहीं सकते।

मैंने सारी संसार की संस्कृतियाँ देख लीं। एक तो जो अनादिकाल से संस्कृतियां चली आ रही हैं। Egypt (मिस्र) में कहिए, China (चीन) में कहिए, या आप चाहे तो Greece (यूनान) में कहिये, Italy (इटली) में कहिये, काफी पुरानी सभ्यताएं हैं। हजारों वर्ष की सभ्यताएं हैं, और ऐतिहासिक भी हैं। हमारी तो इतनी पुरानी है कि वो कुछ ऐतिहासिक है, कोई पौराणिक है और कोई तो कोई समझ ही नहीं पाता, इतनी पुरानी सभ्यता हमारी है।

और इन सभी सभ्यताओं ने विकृति को ही माना, और उसमें बहक गए। उसमें दिखाया कि परशुराम जो थे, उनमें औरतों के प्रति बड़ा आकर्षण था। कैसे हो सकता है ? बाप रे बाप ! वो तो जल्लाद थे, वो कैसे औरतों के प्रति आकर्षण रखेंगे ? विष्णु को दूसरे गंदे स्वरूप में दिखा दिया। इस तरह हरेक देव-देवताओं को उन्होंने उतार के छोड़ा।

अब, आप रोम में जाइये। वहाँ की संस्कृति देखिये, तो Romans (रोमन लोगों) के लिये तो लोग कहते हैं कि जहाँ ये गए, वहाँ ही सत्यानाश। राक्षसी प्रवृत्ति के लोग थे। Egypt (मिस्र) में जाइये तो भारी भूत-विद्या। China (चीन) में जाइये तो थोड़ा सा आभास हिन्दुस्तान का मिलता है। पर जो भी उनकी संस्कृति है, वो हिन्दुस्तान की संस्कृति पर ही बसी हुई है। जो भी कुछ वो मानते हैं, वो हिन्दुस्तान से गई हुई सभ्यता पर बसी है। उसी प्रकार आप अगर जापान में जाएं, वहाँ भी आप पाते हैं कि हिन्दुस्तान की संस्कृति पर बसी हुई चीजें, जैसे कि Zen (जेन) आदि हैं, ये सब हिन्दुस्तान से गई हुई चीजें हैं।

संसार को हमें सभ्यता देनी है। हमारी संस्कृति में सारी सभ्यताएं इतनी सुन्दर हैं, सबको भुला करके और अब हम उस सभ्यता को ले रहे हैं जिसमें कोई भी सभ्य चीज नहीं है, असभ्य है।

इतना ही नहीं कि हम सभ्य हों, हम सुसभ्य हों। सभ्यता ऐसी हो कि हमारे व्यक्तित्व से शुभ झरे। तभी संसार ठीक हो सकता है।

तो पहले एक भारतीय होने के नाते आप अपने प्रति गर्व की दृष्टि से देखें। अपने प्रति एक अभिमान रखें कि आप भारतीय हैं, आप के पास से संस्कृति की इतनी संपदा है। और कृपया कोशिश करें कि हमारे हरेक जीवन में हम भारतीयता के साथ रहें। अंग्रेजियत को त्याग दें। विलायती चीजों का इस्तेमाल करना बहुत गलत है।

आप जानते हैं आपकी माँ सब भारतीय चीज इस्तेमाल करती है। क्रीम तक वो भारतीय लगाएगी, साबुन भारतीय रहेगा, सब चीज भारतीय होनी चाहिये, चाहें इग्लैंड में रहे, चाहे दुनिया में कहीं भी रहे। और मैं देखती हूँ कि बाहर की कोई चीज लगाओ तो मेरे को तो सुहाती ही नहीं है। कोई क्रीम बाहर की लगाओ तो वो मेरे को सुहाएगी नहीं। मुझे सुहाता नहीं है।

इसलिए जो यहाँ पर, विशेषकर North India (उत्तरी भारत) में आप देखते हैं कि लोग बहुत ज्यादा परदेसी चीजों की ओर, परदेसी सभ्यता की ओर, परदेसी व्यवहार की ओर इतने झुके जा रहे हैं। ये कहाँ पहुँचे हैं? कम से कम अपनी सभ्यता तो सम्हालो।

सभ्यता के बाद धर्म का सवाल आता है। धर्म हमारे यहां संतुलन में है। जरूरत से ज्यादा बात करना, जरूरत से ज्यादा किसी पर अतिशयता करना, किसी पर हावी होना, ये गलत बात है।

सबसे तो ज्यादा आश्चर्य की बात ये है कि हमारे यहां उत्तर हिन्दुस्तान में औरतों पर बड़ा ज्यादा domination (आधिपत्य) है। औरतों को बहुत बुरी तरह से हम लोग यहां पर सताते हैं। कोई औरतों की इज्जत ही नहीं है उत्तर हिन्दुस्तान में। औरत को जिस तरह से भी हो सके दबाया जाए, औरत के प्रति कोई भी श्रद्धा नहीं दिखाई देती। फिर औरतें निकलती हैं एकदम यहां से जो तो एकदम तूफानमार—फिर वो जूते से ही बोलती हैं।

अगर आप इतनी उस चीज को दबा दीजिये तो ऐसी ही औरतें खोपड़ी पर बैठेंगी। मैं तो यू०पी० में देखती हूँ कि वहाँ तो जो औरत वैश्या जैसी है, तो बहुत मानी जाती है, और या जो औरत डंडा लेकर लेकर बैठी है। और सीधी-सरल अच्छी औरत हमेशा दबाई जाती है। बुरी तरह से उसको सताया जाता है। ये वो कहते हैं मुसलमानों से आया है। लेकिन मैं मुसलमान देशों में गई हूँ, रियाद में रही हूँ। हाँ, मानते हैं वहां चार बीबियां करते हैं, जो भी करते हैं, लेकिन औरत की कितनी इज्जत है वहाँ! बहुत ख्याल करते हैं कि एक औरत अबला है, उसकी मदद करनी चाहिये। बहुत इज्जत करते हैं। हम न तो मुसलमान, न हिन्दू, पता नहीं कहाँ के आ गए जो कि औरतों को इस तरह से सताते हैं। अपने इस देहली शहर में सुनते हैं बहुत सी bride-burning (वधुओं को जलाना) हो गई।

मैं आज ये बात इसलिये कह रही हूँ कि मैं परदेस में गई। वहाँ मुझसे लोग ये ही पूछते हैं कि ये क्या आपकी सभ्यता है, कि आप अपने यहां की bride (वधु) को जला देते हैं!—अब "कायदा पास करो, कायदा कराओ"। क्या हम लोग अन्दर से कायदा नहीं रख सकते? औरत की हम इज्जत नहीं कर सकते? औरत पर हम बिगड़ते हैं। औरत पर क्रोध करना पाप है। आपको क्या अधिकार है कि आप औरत पर क्रोध करें? वो आपके बच्चों की मां है। औरतों को जरूर चाहिये कि वो भी चरित्रवान हों, और वो भी पूजनीय रहें। अगर औरत पूजनीय नहीं है, तो भी उस पर क्रोध करने से फ़ायदा क्या? लेकिन अगर पुरुष पूजनीय नहीं है तो भी वो क्रोध कर सकता है, और वो महादुष्ट हो और उसे और किसी स्त्री से लगाव होता तो भी वो दुष्टता कर सकता है। ये भारतीय संस्कृति नहीं है।

इस देश में इतनी बड़ी-बड़ी महान औरतें हो गई हैं जो पण्डितों के साथ बैठकर वाद-विवाद किया करती थीं। वो सब कुछ खो गया। या तो अब कोई राक्षसी प्रकृति की स्त्री आ जाए उसके सामने आप झुक जाएंगे और या तो कोई बिलकुल

ही गिरी हुई औरत हो, तो उसके आगे आप दौड़ेंगे। ये क्या पुरुषार्थ है ?

अब रही औरतों की बात कि वो भी और औरतों की देखा-देखी उस तरह से रहने लग जाती हैं जिस तरफ औरतों की नजर जाती है। जैसे आदमी लोग औरतों की ओर देखते हैं, उधर ही उनकी नजर जाती है, तो जैसे ये औरतें जिस तरह का कपड़ा पहनती हैं, इस तरह से घूमती-फिरती हैं, इस तरह से बातचीत करती हैं, इनका ढंग जैसा बिलकुल छिछोरा है, उसी ढंग से औरतें भी अपने को बनाना शुरू कर देती हैं।

क्योंकि औरत में व्यक्तित्व ही नहीं है। उसको दबा-दबा कर मार डाला। वो सोचती है, भई इसी बहाने खुश हो जाए आदमी।

मैं तो इसमें दोषी पुरुषों को समझूंगी हर हालत में। क्योंकि जब पुरुष औरत को बढ़ावा दे, उसकी महानता बढ़ाए, तभी औरत बढ़ती है इस देश में।

इसका ये कभी भी मतलब नहीं कि औरत आदमी के सामने बोले। इसका मतलब नहीं। औरत को सम्मान के साथ अपने पति के साथ रहना चाहिये। उसकी हर इच्छा को पूर्ण करना चाहिये, उसमें कुछ नहीं जाता। औरत धरा (धरती) जैसी है, उसके पास अनंत शक्ति है। धरा जैसे उसे पति को प्लावित करना चाहिये। लेकिन अगर आप हर समय धरा को चूसते रहें, तो एक दिन अन्दर से ज्वालामुखी निकल आता है, ये भी समझ लेना चाहिये।

बाहर जाकर शर्म आती है यह सोच-सोचकर कि जिस तरह के किस्से यहां के लोगों की तरफ फैले। पर ये चीजें महाराष्ट्र में क्यों नहीं होतीं ? महाराष्ट्र में तो dowry system (दहेज प्रथा) बिलकुल नहीं है। South India (दक्षिण भारत) में भी dowry (दहेज) का system (प्रथा) बहुत चल पड़ा है। उसकी वजह वह दिल्ली में जो आकर बैठे हैं सब मद्रासी। उनको सबको वापस करो, या उनको कहो कि मद्रासी बनो। दिल्ली में सीखे हैं "इतने रुपये dowry लेंगे, उतने रुपये dowry लेंगे।" बड़ा आश्चर्य होता है ! हाँ, ठीक है, लड़की के नाम से रुपया-पैसा जरूर कर देना चाहिये। लेकिन dowry लेने वाले होते ही दूसरे हैं, लड़की से थोड़े ही कोई संबन्ध रहता है ?

भारतीय सभ्यता में ये कहीं भी नहीं है। हमेशा स्त्री का मान···। 'राधा कृष्ण' कहा जाता है। कृष्ण, राधा के बगैर कुछ भी नहीं हैं। मान लीजिये, जब कंस को मारना था तब भी उन्होंने राधा को याद किया। राधा की ही शक्ति से ही मारा है, वो क्या मार सकते थे अपने मामा को ? अगर मार सकते तो जब पैदा हुए तभी मार डालते।

हमारे यहाँ 'सीता-राम' कहा जाता है। हमारी संस्कृति में सब चीजें इतनी सुन्दर-सुन्दर हैं कि उसको अगर बारीकी से देखा जाए तो मनुष्य समझ सकता है कि इसकी सुन्दरता क्या है।

लेकिन ज्यादातर भारतीय संस्कृति के बारे में लिखने वाले ऐसे लिखते हैं, जैसे कि बैंक में कहाँ-कहाँ छेद हों, उसका अनुभव कि इसमें ये खराबी है, वो खराबी है। कोई ये बात नहीं लिखता है कि कितनी बड़ी भारी बैंक है। लिखता ये है इसमें इधर से छेद है, उधर से छेद हैं। वो बनाए इन्होंने ही हैं। हो सकता है उसमें एक दो बातें ठीक करनी भी हों, एक-आध इधर-उधर की, लेकिन एक-एक चीज पर आप देखिये कि "स्वार्थ" शब्द देखिये। 'स्व' का 'अर्थ' पाना स्वार्थ है। परम स्वार्थ वही है कि जब आपने परम को पा लिया।

और मैं देखती हूँ कि जो परदेश में भी लोग हैं, वो जब हमारी औरतों को देखते हैं कि हम उनके जैसे कपड़े पहन के घूमती हैं, उनकी जैसे बात-चीत करती हैं, उनको जरा भी इज्जत नहीं करते। और जो औरत अपनी भारतीयता पर खड़ी है, उसकी बड़ी इज्जत होती है !

मैं जब एक बार जापान गई थी १९६० में, बहुत साल पहले की बात है, तो हर जगह जाएं तो बड़ा हमारा मान-पान हो। और जब हम शिकामा नाम के एक बन्दरगाह पर पहुँचे, तो 'हजारों' लोगों की भीड़ वहाँ पर थी। तो मैंने कहा, 'ये कौन आए हैं ? सब लोग कहाँ से आए हैं ?' तो कहने लगे, 'आपको देखने।' 'मुझे ? क्यों ?' कहने लगे, 'क्योंकि उनके पास खबर पहुँची कि बिलकुल पूरी भारतीय स्त्री यहाँ पर आई हुई है। और उसको देखने से पता हो जाएगा कि बुद्ध की माँ कैसी थी।' और सब वहाँ खड़े तरस गए देखने के लिए एक भारतीय स्त्री को। वहाँ सारी सिन्धी औरतें आधे कपड़े पहनकर घूमती हैं। वो तरस गए देखने के लिये कि एक भारतीय नारी कैसी होती है, किस तरह से कपड़े पहनती है, कैसे उसके बाल हैं, क्या है। हम लोग जहाँ भी जाएं, हमें वो लोग कुछ उपहार दे दें। एक जगह बरसात हो रही थी, तो हम अन्दर चले गए। वहाँ उन्होंने हमको कुछ उपहार दे दिये। तो जो translate (अनुवाद) कर रहे थे, तो उनसे हमने कहा, 'ये हम को हर जगह उपहार क्यों देते हैं ?' टैक्सी में बैठिये तो टैक्सी वाला गाड़ी रोक कर कुछ उपहार देगा। कहने लगे, 'क्योंकि आप Royal family (सम्मानित परिवार) के हैं।' हमने कहा 'Royal family के, ये कैसे कहा ? ये तो बात नहीं है।' 'नहीं', कहने लगे—'देखिये आप बाल कैसे बनाती हैं। हमारे यहां Royal family के लोग ही इस तरह के बाल बनाते हैं। और बाकी के जो हैं hair dresser के पास जाते हैं। ये तो royal पना की निशानी है कि अपनी इज्जत में खड़े हो।' हम लोग इतने हैरान हो गए ! हमारी लड़कियाँ और हम तो इतने हैरान हो गए कि सच्ची ये बात है !

इसका निरूपण हम तभी कर सकते हैं जब हम इसे बाहर जाकर देखें। और जब तक हम इस देश में हैं हम नहीं समझ पाते कि हरेक कितनी सुन्दर है और अच्छी बनाई गई है।

स्त्री के लिए अलंकार आवश्यक बताया गया है उसे अलंकार पहनना चाहिये। विवाहित स्त्री के लिये बताया गया है कि उसको अलंकार पहनना चाहिये। खासकर के उस पर सारे घर की दारोमदार होती है, उसके चक्र ठीक रहने चाहिएं उनको सुशोभित रखना चाहिये। उस तरह से कायदे से कपड़े पहनना चाहिये, कायदे से रहना चाहिए।

लेकिन अपने को विशेष आकर्षक बनाना वगैरह, ये सब चीजें भारतीय संस्कृति की नहीं हैं। कोई भी स्त्री भारत में अपने को आकर्षक बनाने के लिये नहीं पहनती है, पर हरेक समय-समय पर जो occasion (अवसर) होता है, उसके अनुसार वो अपने को इसलिये सजाती है, और इसलिये कपड़े अच्छे से पहनती है, कि जो वो अवसर है, वो और भी सुन्दर हो जाए।

जैसे कि महाराष्ट्र में आप देखिये कि अगर अब हमारी पूजा हो रही है, तो नाक की नथ पहनेंगी, यहाँ का पहनेंगी, वहाँ का पहनेंगी, best (सबसे अच्छी) साड़ी जो होगी वो पहन कर आएंगी। यहां तक कि airport (हवाई अड्डे) पर जब हमें लेने आएंगी, तो सब पहनकर आएंगी। तो मैंने कहा कि ये सब airport पर पहन कर क्यों आईं। तो कहने लगीं कि देवी लग—माने देवी के मंदिर में जाना है, देवी को देखना है, तो क्या ऐसे ही देखेंगे ? ये दिखाना चाहिये कि हम कितने खुश हैं, कितने सुख में हैं।

लेकिन शहरी जो हमारी औरतें हैं, महाराष्ट्र में तो भी अपने, खासकर दिल्ली से संबंध अगर हो गया है तो उनके नखरे ही नहीं मिलते। तो दिल्ली से बहुत लोग प्रभावित हैं। इसलिये मैं सोचती हूँ कि आप लोगों को पूरा समझाया जाए कि भारतीय संस्कृति की एक-एक चीज को आप समझें, उसके बारे में पढ़ें।

स्त्री की कल्पना, ये समझना चाहिये कि हरेक स्त्री एक गृहलक्ष्मी है। घर में उसका मान रखना, उनको इज्जत से रखना बहुत जरूरी है।

दूसरी बड़ी मुझे हैरानी होती है कि उत्तर हिन्दुस्तान में लोग अपनी पत्नी को इतना नहीं मानते जितना अपनी लड़कियों को मानते हैं। समझ में नहीं आता, बिलकुल मुसलमानी पद्धति है। लड़की को मानना और बीबी को नहीं मानना, ये बड़ी अजीब सी बात लगती है। लड़की तो कल ब्याह होकर चली जाएगी और बीबी तो जिन्दगी भर के लिये आपकी अपनी है। ये कुछ समझ में बात आती नहीं है।

उसी प्रकार अपने पति को कुछ नहीं मानना और लड़के को सब कुछ मानना, ये भी इधर ज्यादा बीमारी है। लड़का बहुत बड़ी चीज है। इधर उत्तर हिन्दुस्तान में लड़का बहुत बड़ी चीज है। किसी के लड़का न हो गया कि क्या उसके घर में हाथी आ गया! वो बाद में उठकर मां को लात ही मारे, कोई हर्जा नहीं है। उसका रात-दिन अपमान ही करे, कोई हर्जा नहीं, पर लड़का हो गया! उसके बाद असल मिठाई बांटी जाएगी।

शुरू से ही स्त्री के प्रति ऐसी निन्दनीय वृति रखने से औरत हमेशा असुरक्षित (insecure) रहती है। जो औरत insecure रहती है वो या तो आप को नचा के छोड़ देगी, या आपका सर्व-नाश करके छोड़ेगी। स्त्री के अंदर पूरी इज्जत और मान आप दीजिये। बच्चों को भी।

बच्चों से भी आप मान से बात करिये। "आप बच्चे हैं, आप विशेष हैं, आप सहजयोगी हैं। आप का मान होना चाहिये। आप बड़ों जैसे बैठिये। आप सहजयोगियों जैसे बैठिये।" ये अगर आप अपने बच्चों को समझाने लग जाएं तो बच्चे कहां से कहां पहुँच सकते हैं। लेकिन ये बात बहुत कम पाई जाती है। ज्यादातर हम बच्चों को झिड़कते ही रहते हैं, उनके अन्दर कोई इज्जत की भावना नहीं आती। जब उनके अन्दर इज्जत की भावना नहीं आती है, तो बच्चे उसी तरह से बर्ताव करते हैं जैसे आपके नौकर लोग बर्ताव करें।

मैं तो कहती हूं नौकरों तक को हम लोगों को एक इज्जत से, बकायदा जैसे कुटुम्ब पद्धति हमारे यहाँ है, उसको सम्भाल के वो करना चाहिये। सारे कुटुम्ब को सम्भाल के, सब को प्यार दे कर के। अपनी न बात करें। जिस तरह से औरतों की भी आदत होती है, मैंने देखा कि, "हमें तो ये चीज पसंद नहीं। ये सफ़ाई नहीं हुई। घर में ये नहीं हुआ। ये ठीक होना चाहिये।" आप करिये। ये आपका काम है। और खुश होइये। और तीन बार खराब हो तो चार बार ठीक करिये। क्योंकि ये आपका शौक है।

खाना बनाने का शौक होना चाहिये, हर चीज का शौक होना चाहिये औरत को। और दूसरों के लिये करने की शक्ति होनी चाहिये। लेकिन इसका मतलब नहीं कि आदमी खोपड़ी पर चढ़ कर बैठ जाए। वो इस चीज की इज्जत करे और सोचे...

इंग्लैण्ड में हर आदमी बर्तन माँजता है हर आदमी। सिवाय हमारे घर के। और वो तो अगर आप कह दें कि आप बर्तन मांजिए तो गए, कल

बर्तन ही टूट जाएंगे। वो जरूर मांजेंगे, जब गुस्सा चढ़े तो। लेकिन अगर वो बर्तन मांजने बैठ जाएं, तो गए काम से।

सबसे बड़ा अहंकार ये है कि "मैं पुरुष हूँ।" पुरुष—श्री कृष्ण के सिवाय, मैं तो किसी को नहीं देख पाती। जो करने वाला है, वही है, और भोगने वाले भी वही हैं। पुरुष और प्रकृति जो है सो है, हम अपने को बेकार ही पुरुष समझ करके बड़ा भारी अहंकार अपने अंदर लिये हुए हैं। हम सब मां के बेटे हैं। इस अहंकार से आप सब लोग छुट्टी पाइए। बहुत ज्यादा है! अभी भी, सहजयोग में भी बहुत है।

और फिर यहां तक कि बीबी को मारना, पीटना। बीबी को मारना, पीटना, ये अधर्म है। फिर बीबी पीटे तो बिलकुल अधर्म हो जाता है। हाँ, होती हैं, ऐसी भी हमने देखी हैं।

लेकिन समझदारी की बात ये है, हम दोनों रथ के दो पहिये हैं, एक left (बाएं) में है, एक right (दाएं) में है। कोई सा भी पहिया अगर छोटा हो जाए, तो पहिया गोल-गोल घूमेगा। दोनों एक साथ एक जैसे होने चाहिये, पर दोनों एक जगह नहीं हैं, एक left में है, एक right में। right (दायां) जो है, उसका कार्य ये है कि वो दिशा दे, बाह्य की तरफ देखे, बाह्य की चीजें सम्भाले, घर के बाहर सफाई करे। जैसे वहां करते हैं लोग।

बाहर की सफाई आदमियों को करना आना ही चाहिये, सहयोगियों को। क्योंकि वो बाहर की सफाई नहीं करते हैं, इसीलिये अपने बाहर के आंगन गंदे रहते हैं, अंदर की सब सफाई रहती है। औरत जो झाड़ू मारे, सब करे, घर के अंदर, और आदमी जो है वो बिलकुल नहीं देखता कि बाहर सफाई है या नहीं। औरत तो बाहर जा नहीं सकती, और आदमी करने वाला नहीं है, इसीलिये अपने जितने गांव-शहर गंदे रहते हैं इसलिये कि आदमी अपने यहां कोई सफाई नहीं करते। इंग्लैण्ड में देखिये हर Saturday-Sunday (शनिवार-रविवार) सब आदमी आपस में competition (स्पर्धा) लगाते हैं कि तेरा अच्छा कि मेरा अच्छा। सब एक special dress (खास पोशाक) पहनकर सब खड़े हो जाते हैं, और अपनी सफाई करते हैं।

सहजयोगियों को कोई हर्ज नहीं है। क्योंकि हमें बदलना है। हम दूसरे हैं। हमें कोई हर्ज नहीं है कि हम ये करें। पहले जमाने में हमारी संस्कृति सही थी कि बाहर की सारी सफाई आदमी लोग करते थे, औरतें नहीं। और वही चीज आज भी हमारे अंदर आ जाए तो आप देखिये कि शुरुआत हो जाएगी कि हम बाहर की सफाई और अंदर की सफाई हमारे देश की शुरू हो जाए, तो गंदगी कहाँ रहेगी?

लेकिन उससे बड़े फायदे हो जाते हैं, जब आदमी लोग सफाई करना शुरू कर देते हैं। जैसे लंडन पहुँचे आप, तो हमने देखा यहाँ बर्तन धोने के, kitchen (रसोई घर) साफ करने के, इन्तजामात बड़े जबरदस्त हैं। तो हमने कहा कि भाई ये कैसे किया, यहाँ एक से एक चीजें बनी हुई हैं। इससे इसको रगड़ दो तो पांच मिनट में निकल जाएगा। वो कढ़ाई है, उसमें ये लगा दो तो दो मिनट में सफाई हो जाती है। हमने कहा, हम लोग तो रगड़ते-रगड़ते मर जाएं, ये निकलती नहीं कढ़ाई, ये है क्या? पता हुआ कि आदमियों को सफाई करनी पड़ती है न! तो उन्होंने सारे scientists (वैज्ञानिकों) को बुलाया कि "बाबा रे! पता लगाओ इसको निकालने का इंतजाम। नहीं तो हमको कढ़ाई मांजनी पड़ेगी।" कभी-कभी बर्तन अगर आदमी मांजे तो कुछ फायदा ही हो जाएगा। और जब आप काम करते हैं, उनके साथ, तो हाथ बंटाने से ये पता होता है कि ये काम

कितना कठिन है, और कितनी मुश्किल का काम है।

तो अपने प्रति धारणाएं बना लेने से कोई बड़ा नहीं हो जाता। और मुझे तो ये आश्चर्य होता है कि सब सहजयोगिनी जो हैं, भारतीय भी हैं, तो हमसे कहती हैं, "माँ हमारी शादी बाहर ही करा दो अच्छा है।" तो मैंने कहा क्यों ? कहने लगे, "अब हमें सहजयोगिनी होकर डंडे नहीं खाने।" आप सोच लीजिये। बड़ी मुश्किल से ये परदेसी लड़कियों को भुलावा दे देकर मैं यहां शादी कराती हूँ। टिक जाएं तो नसीब समझ लो !

लेकिन वो चले जाते हैं परदेस, फिर सीख जाते जाते हैं वहाँ। हमने देखा कि.....खूब बर्तन माँज रहा है ! तो हमने कहा कि भाई कैसे क्या सीख गए ? कहने लगे, "यहां सभी सीख जाते हैं !" खूब पतीले उठा रहा था हमारे साथ ! और यहां अगर आप कहते, तो बिगड़ता, और कहता कि, "नहीं, मुझ से नहीं होने वाली ये सब बेकार की चीजें।" वहां खूब मेरे साथ पतीले उठा रहा था। मैंने कहा, "उन लोगों को करने दो, तुम क्यों उठा रहे हो ?" कहने लगे, "मुझे सीखना जो है।" जो आदमी वहां ये सब जानता नहीं उसे वहाँ 'निठल्लू' कहते हैं।

उन लोगों से ये चीज जरूर हमें सीखनी है।

नसीब से भई हमारे यहाँ ये प्रश्न नहीं, क्योंकि हमें तीन servants (नौकर) allowed (मिले) हैं। तो भगवान की कृपा से हमारे घर वाले तो कभी नहीं कर सकते। हमने ही उनको खराब कर रखा है। लेकिन तो भी मैं कहती हूं कि कोशिश करते हैं। उनको जरा लगता है कि भई देखो सब लोग कर रहे हैं और हम नहीं कर रहे हैं, वो क्या कहेंगे। कोशिश करते हैं।

इसलिये जो-जो वहां जा रहे हैं, कृपया सब सीख कर जाएं। उसके बगैर आपका वहां मान नहीं होने वाला।

तो ये चीजें हम लोग इस पर ले आते हैं कि आनन्द का स्रोत आत्मा है। और उस आनन्द को हमने पाया, और वो हमारे रग-रग में से बहना चाहिये, हमारे जीवन से बहना चाहिये, हमारे हर व्यवहार से बहना चाहिये। उसके लिये क्या करना चाहिये ?

पहले, सबसे पहले, हमें देना आना चाहिये। जो आदमी दे नहीं सकता, वो आनन्द का मजा नहीं उठा सकता, क्योंकि जब तक चीज बहेगी नहीं तो कैसा मजा आएगा ? जैसे एक मेंढक एक छोटे से तालाब में, जिसका पानी नहीं बहता है, काई में रहता है। उसी प्रकार अगर हम अपने जीवन को बिताएं, तो बिता सकते हैं। और हमारे भी शरीर पर—जैसे कि एक मेंढक के शरीर पर भी काई जैसे जम जाती है, काई जैसा रंग—ऐसा ही हमारे जीवन का रंग काई जैसा हो जाएगा।

लेकिन जीवन का रस अगर हमें पाना है, और उसका मजा उठाना है, और आत्मा का आनन्द देखना है, तो हमें चाहिये कि हम अपना दिल खोल दें, और बहाएं इस आनन्द को।

आप जानते हैं कि आपकी माँ की उम्र अब तरेसठ (६३) साल की हो गई है, और हिन्दुस्तान के हिसाब से चौंसठ (६४) साल के हो गए। लेकिन कितनी मेहनत करती है आपकी माँ। कितना सफर। करीबन हर तीसरे दिन सफर, दूसरे दिन सफर। उसके अलावा पहाड़ों जैसी कुण्डलिनी उठाना, बड़ी मेहनत...। फिर, सारे news paper (अखबार) वाले, कि कुछ हैं, कि कुछ हैं। 'पूरी' समय मेहनत चलती है। हमारे साथ एक देवीजी

आई, हमारे से पाँच साल छोटी हैं, और मोदी साहब पूरी समय कहें कि ये बुढ़िया देखो, बिचारी कितनी मेहनत कर रही है। मैंने कहा, और मेरी बात नहीं कर रहे हो तुम ? मैं उनसे पांच साल बड़ी हूँ। उनके लिए तो ये बुढ़िया बेचारी कितना चल रही है, ये बुढ़िया बेचारी कितना कर रही है। मैंने कहा, मैं कौन हूँ। मुझको देखो। वो तो सोचते ही नहीं कि मैं बुढ़िया हूँ।

—क्योंकि अभी तक देने की शक्ति बहुत ज्यादा है, उसकी क्षमता है। जब तक देने की शक्ति आप के अन्दर है, तब तक आप कभी भी बूढ़े नहीं हो सकते। इसलिए देना सीखिए। दिल खोल दीजिए, तब आनन्द देखिए। कैसा बहेगा।

सूक्ष्म में दिल खोल देना चाहिए, कहना चाहिए। लेकिन ये ही हमारी सभ्यता का तत्व है, कि दो। जितने-जितने अपने यहां लोग हो गए हैं, बड़े-बड़े जिनके आख्यान आपने सुने, चाहे हरिश्चन्द्र हैं, जिनकी आपने बात सुनी होती, ये जो कुछ भी आपने पढ़ा है, उसमें ऐसे लोगों की महानता बताई है, जो दिल खोल करके देते थे। और वही आपको भी देना है।

इस संस्कृति की महत्ता जितनी भी गाई जाए, वो कम है। लेकिन सिर्फ महत्ता से नहीं है, वो हमारे अन्दर बिधनी चाहिए। हमारे अन्दर उसका पूरा प्रवेश होना चाहिए। उसके अंग-अंग में हमें मजा आना चाहिए। और हमें उससे खुश होना चाहिए।

अभी भी जहां ये संस्कृति है, वहां बड़ा मजा आता है। एक बार हम गए थे राहुरी के पास। वहां के बहुत से इंजीनियर थे बेचारे। कोई खास तनख्वाह नहीं। छोटे-छोटे घर, जिनमें कि एक छोटी सी बो आई। कहने लगी, "मां, कल आप लोग हमारे यहां breakfast (नाश्ते) पर आइए।" हमने कहा, क्या कर रहे हो, तीस आदमी हैं हम लोग। कहां आप करोगे ? "मां आप आओ न, एक बार मान जाओ। हमें बड़ी खुशी होगी।" मुझे बड़ा force (आग्रह) किया। मैंने कहा, क्या कर रही हो ? तीस आदमियों का breakfast (नाश्ते) कैसे बनाओगी तुम ?.....सुबह छः बजे पहुँचे, तो मंडप बना हुआ है, ऐसा। सब लोगों ने मिल कर रात को तीन बजे से खाना बनाया। और 'इतनी' खुश ! और इतना बढ़िया उन्होंने breakfast (नाश्ता) खिलाया कि मुझे भूलता ही नहीं है। और पता नहीं कहां से benches लाकर लगाए, कहां से इन्तजामात किये। और इतनी खुश जैसे बड़ा भारी कोई बड़ा सभारंभ हो गया हो।

—ये हमारा देश है। ये हमारी सभ्यता है। इसको मत छोड़िए। इसको फिर से पनपाना है, इसको बढ़ावा देना है। हमारा संगीत, हमारी कलाएं, हमारा जो कुछ भी है, बड़ा गहन है। उसको समझिए क्या चीज है। उसकी गहनता में घुसें।

मैं चाहूँगी आपसे जितना भी बन पड़े, हमारे संगीत के बारे में, कला के बारे में जानने का प्रयत्न करें। जो अपनी कला को नहीं जानते, अपने संगीत को नहीं जानते, अपनी भारत माता को नही जानते, वो इस माता को कैसे प्यार कर सकते हैं ? इसीलिए तो हम झगड़ेबाजी करते हैं।

आज सिर्फ आपसे बातचीत करनी थी, सो कर ली। अब मैं चाहती हूँ कि अगले समय मैं आऊं तो आप लोग ये समझें कि हमारे क्या-क्या त्यौहार होते हैं, इन त्यौहारों में क्या-क्या होता है।

हमारे यहां छोटी-छोटी दवाइयां हैं जो कि बहुत सालों से चली आ रही हैं। छोटी-छोटी बातें हैं—जैसे केला खाया, उसके बाद चना खाओ या कोई चीज खाओ, उसके बाद पानी पिओ। धूप में

से आए, आप पानी मत पियो। आजकल लोग सब हिन्दुस्तान में बीमार हो जाते हैं। वजह क्या है ? ये छोटे-छोटे नियम जीवन के जो बनाए हुए हैं, समझदारी के, वो हम नहीं मानते हैं। "इसमें क्या हो गया ?" हो गया क्या, आप अस्पताल में जाएंगे, और क्या होएगा ? अब जैसे अंगूर दिया इन्होंने, समझ लीजिए। अब पहले हमने अंगूर खा लिया। उसके बाद हम limca (जल पेय) नहीं पी सकते। अब तो पी लिया, हमने कहा चलो अब क्या करें। हमारी बात और है। लेकिन आप लोगों को नहीं करना। फल खाने के बाद पानी पी लिया, आइसक्रीम खाने के बाद कॉफी पी ली, या कॉफी के बाद आइसक्रीम खा लिया—तब तो गए !

ये छोटी-छोटी बातें, हमारे जीवन को जो छोटी-छोटी चीजें, हरेक, जिसे कहते हैं, कि हरेक अणु-परमाणु में जो हमारा जीवन बड़ा ही सुघड़, सुव्यवस्थित और ऐसा बनाया गया है जिससे कि मनुष्य हमेशा स्वस्थ रहे, उसकी तन्दुरुस्ती स्वस्थ रहे, उसका मन स्वस्थ रहे, उसका चित्त स्वस्थ रहे, और जिससे अन्त में वो परमात्मा को प्राप्त करे। ऐसा सुन्दर सारा बनाया गया है। लेकिन उसको समझ लेना चाहिए।

और जिस आदमी में चरित्र ही नहीं है, वो आदमी किस काम का ? लेकिन चरित्र को बढ़ावा देने वाली, उसको सजाने वाली, उसको पूरी तरह से प्लावित करने वाली जो शक्ति है, वो है आपकी सभ्यता। सभ्यता से ही आप जानते हैं कि "ये असत्य है, ये हमें शोभा नहीं देता।"

आज की हमारी भेंट में हम चाहेंगे कि आप अपनी भारतीय संस्कृति जो है उसको सर-आंखों पर लगाकर मान्य करें, उसे स्वीकार करें, और उसमें ही आप देखियेगा कि आपका चरित्र ऊंचा उठता जाएगा।

शिवाजी का चरित्र माना जाता है कि बहुत ऊंचा था। शिवाजी की न जाने कितनी ही बातें आपको बतानी चाहिए, लेकिन उनके चरित्र में मां का बहुत बड़ा स्थान है। लेकिन एक बार सुनते हैं, कि कल्याण के सूबेदार की बहू कोई उनके सरदार पकड़ कर लाए। वो बहुत लावण्यवती थी। और उसका बहुत खजाना (धन) था, सब कुछ उठा कर ले आए, उसका सारा माल, उसके सारे जेवरात, और ये और वो, काफ़ी लोगों को पकड़ कर लाए। और जब शिवाजी दरबार में बैठे, उनके सामने पेश किया, तो वो घूंघट तो नहीं, पर नकाब पहने हुई थी। तो उन्होंने कहा कि आप अपना नकाब हटाइये। जब उन्होंने नकाब हटाया तो बड़े काव्यमय थे। बजाये इसके कि कहें कि "आप हमारी बहन हैं, उन्होंने कहा कि "अगर हमारी मां आपकी जितनी खूबसूरत होतीं, तो हम भी आपके जितने खूबसूरत होते।" उसके आंख से आंसू निकल आए। उसके बाद उनकी जितनी भी चीजें थीं, जो जेवरात थे, हर चीज, उनके हर आदमी को बाइज्जत कल्याण तक पहुँचाया। और बहुत नाराज हुए। ये हमारे देश का चरित्र है।

राणा प्रताप एक बार जरा झुक गए, क्योंकि बहुत परेशानी में थे। उनकी लड़की के लिए घास की रोटी बनाई, वो तक एक बिडाल (बिल्ली) उठाकर ले गया। उसको देख करके...कहां, राणा प्रताप जैसा आज कोई आदमी है आपकी politics (राजनीति) में ? सब चोर बैठे हैं।...तो जब वो उठाकर ले गई, बिल्ली, तो राणा प्रताप के मन में आया, और वो चिट्ठी लिखने बैठे शाहजहां को, कि मैं आपकी शरणागत हूँ। जैसे उनकी बीवी ने पढ़ा, उन्होंने भाला उठाया और अपनी लड़की को मारने के लिए दौड़ीं। तो कहने लगे, "ये क्या कर रही हो !" कहने लगीं, "इसको ही मार डालती हूँ, जिसकी वजह से तुम ये सोच रहे हो।" ये हमारी देश की औरतों का चरित्र है।

और आजकल ये नमूने दिखाई दे रहे हैं ! ये कहां से पैदा हुए यहां पता नहीं ! लेकिन सहज-योगियों की औरतें इस तरह की होनी चाहिए, और मर्द भी इसी तरह के होने चाहिए ।

संस्कृति में कहा जाता है कि परस्त्री जो है, वो मां समान है । कोई भी परस्त्री । मां समान है । और परकन्या बेटी समान है । तो हम जब शादी होकर यू०पी० में गए, तो लोग कहने लगे ये तो असंभव है । मैंने कहा, हमने तो बहुत ऐसे लोग देखे हैं । अधिकतर तो हम ऐसे ही लोग देखते हैं । यहां यू०पी० में क्या विशेषता है कि यहां असंभव बात है ? आपकी नजर इतनी खराब कैसे है ? हमने तो जिन्दगी भर ऐसे ही लोग देखे हैं । ये कहां से ये लोग आ गए ? तो हुआ कि नवाब साहब कोई थे, उनकी १६५ बीवियां थी और पता नहीं क्या-क्या... तो और क्या होगा । उनके सामने ideal (आदर्श) ही ऐसे गंदे हैं वहां, तो और क्या होगा ? कोई अच्छे ideal (आदर्श) तो दिखाई नहीं देते ।

जैसे लंडन में एक राजा साहब थे, उन्होंने सात बीवियों को मार डाला, तो वहां और क्या होगा ? आजकल वहां औरतें मार रही हैं आदमियों को ।

तो अपनी संस्कृति जो है, बहुत महत्वपूर्ण है । और उस महत्वपूर्ण संस्कृति को समझना, उसकी गहनता को समझना, हरेक सहजयोगी का परम कर्तव्य है । जब आप लोग उसे समझेंगे, उस पर कुछ लिखेंगे, तभी तो न हमारे परदेश के सहजयोगी भी उसको आत्मसात करेंगे । वो लोग छोटी-छोटी बातें देखते रहते हैं, और सारा वो जोड़ते रहते हैं अपने अन्दर में, मैं देखती हूं । लेकिन हम लोग ये नहीं सीखते, क्योंकि न इधर के, न उधर के रहने की वजह से कोई चीज हम नहीं सीख पाते ।

आशा है अगली बार मैं आऊं, तो आप लोग आनन्द से आत्मा का प्रकाश सब ओर फैलाते हुए नजर आएं । मेरी ये ही इच्छा है कि जो कुछ मेरे अन्दर है, सब मेरे बच्चे पा लें । सब कुछ । और उसी प्रकार दें जैसे मैं दे रही हूं । उसी मन से, उसी शुद्ध भावना से, उसी प्रेम के साथ सबको ये बांटते रहें । यही मैं चाहती हूं ।

—०—

...चीनी पानी में घोलकर दीजिए, जिससे कि वो दांत में न लगे । पानी में घोलकर दी हुई चीनी बच्चों के लिए बहुत जरूरी है । डॉक्टरों का इस मामले में मत सुनिए । वो तो general (सामान्य) चीज चलाते हैं कि अब चीनी मत खाओ, सब लोग चीनी नहीं खा रहे । फिर नमक नहीं खाओ, लोग नमक नहीं खा रहे । भई जिसको जिस चीज की जरूरत है, वो खाओ । बच्चों को चीनी की जरूरत बहुत है । उनको आप चीनी दीजिए । लेकिन ऐसी चीनी न दीजिए, जो दांत में वो खाएं, या इस तरह की । पर चीनी जो कि पेट में चली जाए ।

दूसरे ये, कि गर्मियों में 'कोकम' नाम का एक फल आता है, महाराष्ट्र में मिलेगा । उसको भिगो लिया रात को । उसके दूसरे दिन चाहे तो थोड़ा उबाल लिया । उसका रस निकाल कर उसमें चीनी डाल दीजिए । चीनी डाल करके उसको रख लीजिए । दिन भर बच्चे को वो पीने को दीजिए ।

अगर जॉन्डिस जैसी बीमारी हो जाए तो मूली के पत्ते को, छोटी-छोटी जो पत्तियां होती हैं, उनको उबाल लीजिए । कोमल पत्तियां जिनको कहना चाहिए कि अभी जो निकली हैं । उनको उबाल कर के, उसमें खड़ी शक्कर मिला करके, या चीनी जो वाइब्रेटिड हो, मिला करके बच्चे को दीजिए । और कोई पानी न दें । एक दिन के अन्दर बच्चे का जॉन्डिस ठीक हो सकता है ।

और गर्मियों में अगर मूली का रस दे सकें तो बहुत ही अच्छा है। मूली खूब खाने को दीजिए बच्चों को। बच्चों के लिए मूली बहुत फायदे की चीज है। और उनको ऐसी-ऐसी चीजें दीजिए जिससे कि उन पर बहुत ज्यादा fat (चर्बी) न पहुँचे। हमारे यहाँ बहुत ज्यादा तली हुई चीज बच्चों को दे देते हैं, कुछ सोचते ही नहीं। तली हुई चीज बिलकुल नहीं देना। और दूसरा यहाँ पर एक Liv 52 भी अच्छी दवा मिलती है। वो अगर शुरू कर दें तो एक साल के अन्दर वो भी चल सकती है। लेकिन एक चीज बनती है, जिसको मराठी में कहते हैं 'एरोण्या', छोटी-छोटी काली-काली। नागपुर में बहुत होती है, इसलिए नागपुर में किसी को liver (जिगर) की trouble (बीमारी) नहीं होती।

और जब जाड़ा पड़े तो सोंठ थोड़ी सी पीस करके, उसमें चीनी मिला करके, सवेरे दें बच्चों को। जाड़ा पड़ने पर।

दूसरी चीज कि गन्ने का रस, जितना बच्चा पी सके उतनी चीज अच्छी है उसके लिए। उसमें अदरक, नींबू डाल करके। ये सब फायदा करती हैं।

और बच्चों को ज्यादातर "ये कर रे, वो कर रे" ऐसे नहीं कहना चाहिए। "सवेरे उठो, जल्दी चलो, ये करो" ऐसे नहीं कहना चाहिए। इससे इनको, जिसे तिल्ली कहते हैं, spleen खराब हो जाती है, और इसी से blood cancer हो जाता है। Hectic life जो lead करता है, उसे blood cancer होता है। Hectic नहीं बच्चों को बनाना चाहिए। बच्चों को बहुत शांति पूर्वक रखना चाहिए।

पूड़ी खाना, पराँठे खाना, ये सब गन्दी चीजें हैं। पराँठे तो बिलकुल बन्द कर दीजिए आप लोग।

—०—

दूसरा सहजयोग में compulsory (अनिवार्य) है, compulsory। हर आदमी को अन्दर बनियान पहनना है। और औरतों को अन्दर से शमीज पहननी है, अगर साड़ी पहनती हैं तो नहीं, पर अगर ये पहन रही हैं। और ऊपर से चुनरी लेनी है। जरूरी है। नहीं तो सारे सीने में आपको दर्द होगा। और फिर आप आएंगे कि माँ मेरे सीने में दर्द है। सब लोगों को बनियान पहनना है क्योंकि आप जानते हैं, एक छोटी सी चीज है, कि आपको जब पसीना आता है तो वो पसीना सूख जाता है, और बदन में ठंडक लग जाती है। इसलिए ऐसी चीज होनी चाहिए जो पसीने को खींच ले। बहुत लोगों को ऐसे दर्द होता है। बेकार मुझे परेशान करते हैं। इसलिए सबको compulsory (अनिवार्य) है, और औरतों को भी।

हम भी कॉलेज में पढ़ते थे, हम भी सलवार कुरता पहनते थे, जब थे, हम हमेशा शमीज पहनते थे। सवाल ही नहीं उठता था, पहले तो समझा जाता था कि बदतमीजी है बगैर शमीज के, चुन्नी के कोई लड़की घूमे तो। और दूसरी बात ये भी होती थी कि जब तक उस तरह से पहना न जाए, जब तक समझ लीजिए एक-आध कपड़े के साथ नहीं हो शमीज, तो पहना नहीं जाता था। शमीज पहनने का रिवाज पहले था। अब पता नहीं सब लोग ऐसे fashionable हो गए कि कुछ समझ में नहीं आता। वो किसलिए बनाया गया था? फायदे के लिए कि आपके पसीने को absorb (सोख) कर लेगा।

अगर आप साड़ी पहनें तो ठीक है। साड़ी आपको

ढकेगी, पर साड़ी भी आपको लपेट कर रखना चाहिए। जब आप बाहर जाते हैं साड़ी हमेशा इस तरह से पहनना चाहिए जिससे बदन में आपके... इसके सबके फायदे हैं न। शारीरिक हैं। और दूसरे लज्जा स्वरूप हैं।

बहुत फायदा होता है अगर आप अपने सीने को ढक लें, तो जो हवा आपकी है, खासकर यहां की हवा के लिए तो बहुत ही जरूरी है। इतना पसीना आता है, सारे आपके सीने में वो जकड़ जाता है, फिर आपको बीमारियाँ हो जाती हैं। दुनिया भर की बीमारियाँ मैं देखती हूँ इसीसे होती हैं। टी०बी० तक हो सकता है। इससे इतने कमजोर आपके Lungs (फेफड़े) हो जाते हैं। और पता नहीं डॉक्टर लोग जो बताना है वो बताते नहीं शायद। कोई बताने से सुनेगा थोड़े ही, आजकल फैशन जो हो गया है। या तो फिर फैशन करो और अस्पतालों में रहो।

पूरा बदन ढक कर रहना चाहिए, जब भी बाहर जाइए। क्योंकि नहीं तो तकलीफ हो जाती है।

❋ निर्मल वाणी ❋

यदि आप यह दृढ़ निश्चय कर लें कि हमें अपने स्वयं का सामना करना ही है कि हम देखें कि हम कौन (मैं कौन हूँ, क्या हूँ ?) हैं तो तत्काल सब दुर्गुण एवं त्रुटियां दूर भाग जायेंगी।

❀ ❀ ❀

"मैं" ही वह हूँ जिसने बार-बार जगत के उद्धार के लिए जन्म लिया है किन्तु इस समय "मैं" अपने पूर्ण रूप में एवं सभी शक्तियों के साथ आई हूँ। अब मेरा अवतरण केवल मोक्ष देने के लिए ही नहीं अपितु उद्धार के साथ ही स्वर्गादिक राज्य भी देना है जिसमें आनन्द, वात्सल्य एवं आशिष ही है।

❀ ❀ ❀

जमने के लिये सबसे बड़ी बात यह है कि हमारे चारों ओर आस-पास का जो वातावरण है, उससे जूझने की कोई जरूरत नहीं है। आप अपने से ही अगर ठीक हो जायें, अर्थात् अन्दर से ही आप स्थिर हो जायें, तो बाहर की जितनी भी चीजें हैं, धीरे-धीरे अपने आप स्थिर हो जायेंगी। जो कुछ अन्दर है वही बाहर है, अगर अन्दर से अव्यवस्थित हो तो बाहर जितना भी झंझावात हो तो उसका जबर्दस्त असर रहेगा। अगर आप अन्दर से बिल्कुल शान्त हैं, तो बाहर कुछ भी हो रहा हो, उसका असर नहीं होगा। उल्टा जो बाहर है, वो भी शान्त हो जाएगा। सबसे बड़ी चीज है अपने आपको जमा लेना चाहिए।

❀ ❀ ❀

(द्वितीय कवर पृष्ठ का शेष)

रक्षाकरी, राक्षघ्नी, परमेश्वरी ।
नित्ययौवना, पुण्यलभ्या, शुभकरी ।।११।। जय ।।

जय आदिशक्तिः, पराशक्तिः, गुरूमूर्तिः ।
योगदा, शोभना-सुलभागतिः ।।१२।। जय ।।

जय अचिन्त्यरूपा, सत् चिदानंदरूपिणी ।
त्रिगुणात्मिका, चंडिका, प्राणरूपिणी ।।१३।। जय ।।

जय सुखाराध्या, जय भवानी ।
लज्जा, महतो, क्षिप्रप्रसादिनी ।।१४।। जय ।।

परमाणु, पाशहंत्री, निराधारा ।
वीरमाता, गर्विता, धर्माधारा ।।१५।। जय ।।

स्वस्था, स्वभावमधुरा, भगवती ।
धीरसमर्चिता, परमोदारा, शाश्वती ।।१६।। जय ।।

शमात्मिका, श्री सदाशिव, लीलाविनोदिनी ।
विश्वग्रासा, विश्वगर्भा, विश्वसाक्षिणी ।।१७।। जय ।।

लोकातीता, पुष्टिः, पावनाकृतिः ।
चंद्रनिभा, रविप्रख्या, चितशक्तिः ।।१८।। जय ।।

विमला, वरदा, विजया, विलासिनी ।
वन्दारु जनवत्सला, सहजयोगदायिनी ।।१९।। जय ।।

जय श्री माता जी

—सी० एल० पटेल

Registered with the Registrar of Newspapers under Regn. No. 36999/81

❋ निर्मल वाणी ❋

मैं जो कुछ पसन्द करती हूँ वह मेरी धुन है। परन्तु इसके बावजूद भी मैंने अपने आपको स्वाभाविक बना लिया है, क्योंकि मुझे आपके सम्मुख इस प्रकार से होना चाहिए कि आपको समझ आ जाये कि सिद्धान्त क्या है ? मेरे लिए कोई सिद्धान्त नहीं है। मैं सिद्धान्त सृजन करती हूँ। क्योंकि आप मेरे बच्चे हैं इसलिए मैं आपके लिए कार्य करती हूँ और छोटी-छोटी चीजें आपको सिखाती हूँ।

❋ ❋ ❋

आपको स्मरण रखना चाहिए कि जब आप लोगों से सहजयोग के सम्बन्ध में बात कर रहे हों तो वे सारा समय आपको देखते रहेंगे और यह समझने का प्रयास करेंगे कि इसमें आपकी पैठ कितनी है ? जैसा मैं आपको समझती हूँ वैसा ही आप भी उनको समझने का प्रयास करें।

❋ ❋ ❋

सहजयोग को सामूहिकता लोग समझ नहीं पाते हैं, इसलिए बहुत गड़बड़ होता है। आपको सामूहिकता में आना पड़ेगा। एक दिन हफ्ते में कम-से-कम सेन्टर में आ करके आपको देखना पड़ेगा कि आपके वाइब्रेशन्स (चैतन्य लहरियां) ठीक हैं या नहीं। दूसरों पर मेहनत करनी पड़ेगी। आप दीप इसलिए बनाये गये हैं कि दूसरों को देना होगा। इसलिए नहीं बनाये गये कि आप अपने ही घर बनाते रहिए। फिर वही दीप हो सकता है बिलकुल बुझ जाए। ये दीप सामूहिकता में ही जल सकता है।

❋ ❋ ❋

आप ही अपनी रुकावट हैं। और कोई आपकी रुकावट नहीं कर सकता। कोई भी दुनिया का आदमी आप पर तंत्र-मंत्र आदि 'कोई' चीज नहीं डाल सकता। आप ही अपने साथ अगर खराबी न करें और पहचाने रहें कि कौन आदमी कैसी बातें करता है, आप खुद ही समझ लेंगे कि इस आदमी में कोई न कोई दुष्टता आ गयी है। इसमें कोई न कोई खराबी है। उसमें साथ देने की कोई जरूरत नहीं है। फिर चाहे वो आपका पति ही हो, चाहे आपकी वो पत्नी हो। उसमें लड़ाई झगड़ा करने की 'कोई' जरूरत नहीं। वो अपने आप ही ठीक हो जाएगा।

❋ ❋ ❋

Edited & Published by Sh. S. C. Rai, 43, Bunglow Road, Delhi-110007 and
Printed at Ratnadeep Press, Darya Ganj, New Delhi-110002.
One Issue Rs. 7.00, Annual Subscription Rs. 30.00 ; Foreign (By Airmail £ 7 $ 14)